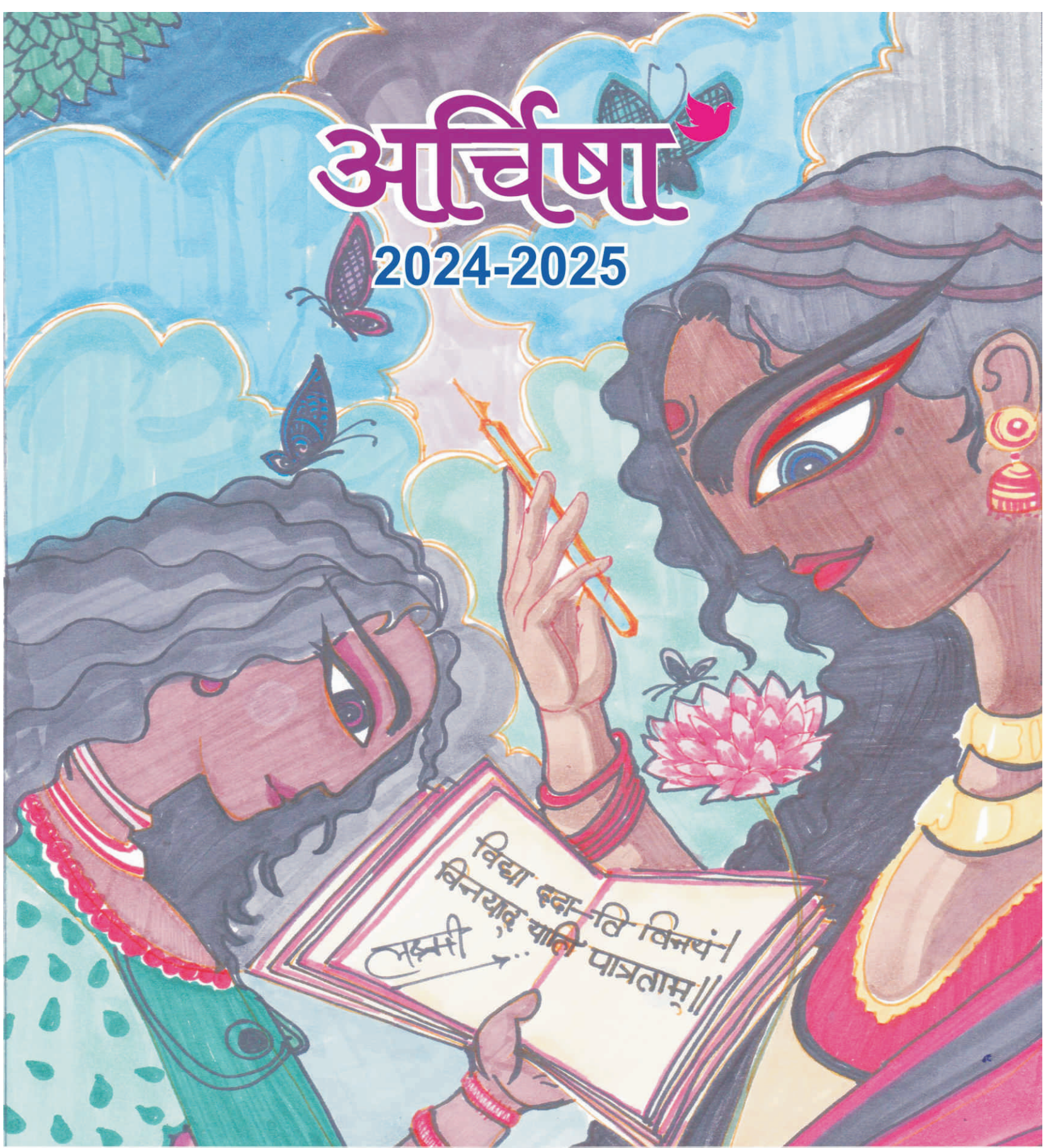


अर्चिषा

2024-2025



**GOVERNMENT POSTGRADUATE COLLEGE FOR WOMEN
SECTOR-14, PANCHKULA**

प्राचार्या की ओर से संदेश



प्रिय छात्राओ,

महाविद्यालय में आप सभी का हार्दिक स्वागत है। मेरी यह कामना है कि आप सभी तन्दुरुस्त रहें, और मनदुरुस्त भी रहें।

यह हर्ष का विषय है कि हमारा महाविद्यालय अपनी वार्षिक पत्रिका नियमित प्रकाशित करता है। यह पत्रिका महाविद्यालय की गतिविधियों का दर्पण है और साथ ही यह आपकी रचनात्मकता प्रस्तुत करने का एक शानदार मंच भी है। मैं संपादक मंडल को पत्रिका के सफल सम्पादन एवं प्रकाशन के लिए हार्दिक शुभकामनाएं देते हुए यह पत्रिका आपको समर्पित करती हूँ।

शिक्षा हमें वातावरण के साथ तालमेल बैठाकर सामाजिक परिवेश के प्रति संवेदनशील करती है, हमें अनुशासन सिखाती है और किसी भी चुनौती का सामना करने के लिए तैयार करती है।

शिक्षा जीवन स्तर को ऊंचा उठाने के लिए भी अनंत मार्ग खोलती है। संभव है कि कुछ बाधाओं को लांघना पड़े परंतु यदि आप धैर्य से अपने लक्ष्य को पाने का प्रयास करते रहेंगे तो आपको सफलता मिलेगी ही। जीवन में आने वाली कठिनाइयाँ और चुनौतियाँ हमें रोकने के लिए नहीं, बल्कि हमें सशक्त बनाने के लिए होती हैं। जिस प्रकार हम जमीन पर केवल इसलिए चल और दौड़ पाते हैं क्योंकि हमारे पैरों और जमीन के बीच घर्षण होता है - यदि यह घर्षण न हो, तो हम फिसल जाएँ - उसी प्रकार जीवन की चुनौतियाँ हमें स्थिरता और संतुलन देती हैं।

कवि के शब्दों में :

“तुंदी-ए-बाद-ए-मुर्वालिफ से न घबरा ऐ उकाब,
ये तो चलती है तुझे ऊँचा उड़ने के लिए।”

(हे बाज, विपरीत हवा की तीव्रता से मत डरो, यह केवल तुम्हें और अधिक ऊंचा उड़ने में मदद करने के लिए चलती है।)

हमारा महाविद्यालय हर कदम पर आपके साथ है - आपकी शिक्षा, सुरक्षा और सशक्तिकरण के लिए पूर्णतः प्रतिबद्ध।

आपके उज्ज्वल भविष्य की शुभकामनाओं सहित,

स्नेहपूर्वक,
आपकी अपनी,
ऋचा सेतिया
प्राचार्या

सम्पादकीय



महाविद्यालयीय पत्रिका अर्चिषा का मेरे सम्पादन में आने वाला यह चतुर्थ अंक है। ये अंक मेरे लिए इस अर्थ में भी विशेष है कि इसके आने के साथ ही मैं भी अपने सुदीर्घ शैक्षणिक कार्यकाल के अंतिम चरण तक सफलतापूर्वक आन पहुंची हूँ। इन सभी अंकों के सफल प्रकाशन के लिए मैं प्राचार्यगण, साथी सम्पादकवृंद, छात्र-सम्पादक व सभी योगदानकर्ताओं की हृदय-तल से आभारी हूँ।

इस वर्ष के इ-अंक के लिए मैं सम्पादक-मंडल श्रीमती कमलेश शर्मा, डॉ. सुनीता, डॉ. नीलिमा, श्रीमती नंदिनी कालिया और श्रीमती बलविंदर कौर की धन्यवादी हूँ। पत्रिका का मुखपृष्ठ हमारी होनहार छात्रा लक्ष्मी के हुनर की बानगी है, जिसके लिए वह प्रशंसा की पात्र है।

कभी सोचती हूँ तो लगता है कि जीवन की इस वृहत्कथा का कितना बड़ा भाग संघर्ष घेरे रहता है। सृष्टि के आदि से लेकर अद्यतन मानव-जीवन का इतिहास संघर्षों और उन पर विजय पाने वाली जिजीविषा की ही दास्तान है। संघर्ष हर बाहरी-आंतरिक, सम-विषम परिस्थिति में हिम्मत और आशा के साथ उत्तरोत्तर आगे बढ़ते जाने का नाम है। हम सबके जीवन में संघर्ष अनिवार्य, अवश्यभावी और अपरिहार्य है। सीधा सपाट जीवन किसी का दिवास्वप्न तो हो सकता है, लक्ष्य नहीं।

सहज सुलभ बिना लड़े मिल जाने वाली तो जीत भी बेमतलब और बेमजा लगती है। असली रस तो लग्न की लौ लगाकर, कठोर परिश्रम में अस्थिमज्जा जलाकर, विफलताओं के कड़वे घूंट पीकर, दर्द और पीड़ा के रास्तों से गुजर कर, कांटे बिंधो पांवों से सफलता रूपी सुमन का पराग पाने में है। अग्नि में तपा हुआ सोना और दुखों की कसौटी पर कसा हुआ व्यक्ति ही निखरते हैं, सफर में रहने वाले धूल-धूसरित चेहरे ही चमकते हैं।

जीवन-नैया की सार्थकता जग के सागर में उतरकर राह में मिलने वाले तूफानों का साहस से सामना करते हुए पार उतरने में है, न कि किनारे के सुरक्षित ठौर से बंधे रहकर लहरों और हवाओं के साथ निष्प्रयोजन डोलने में। संघर्ष वह दृढ़ विश्वास और आस्था है जो हमें आश्वस्त करता है कि

“घटा के पीछे हो छुपी या लुप्त अंधकार में,
प्रकाश की किरण तो आएगी तमस को भेद कर।” (डॉ. दिनेश दधीचि)

संघर्षों से मिले अनुभव हमारे अंतःकरण का परिष्करण कर हमें क्रमशः आत्मखोज, आत्मज्ञान और आत्मविकास की ओर ले जाते हैं। सच्चा संघर्ष हमें हृदयहीन, नकारात्मक अथवा निराशावादी नहीं बनाता अपितु जीवन के वृहद् मूल्यों से अवगत करा उनके अनुसार अपनी प्राथमिकताएँ तय करना सिखाता है। चहुं ओर से तरह-तरह के दबावों, जटिलताओं और असुरक्षाओं के बोझ तले दबी हमारी युवा पीढ़ी के लिए ये और जरूरी हो जाता है कि वे आत्मबल, मानसिक दृढ़ता और सकारात्मक सक्रियता के साथ लगातार आगे बढ़ते रहें। यही निरंतरता जीवन का निचोड़ है। इसे मेरी ओर से *schwanengesang (swan song)* या विदा-संदेश भी मान सकते हैं, जिसका पटाक्षेप अपने एक कवितांश के माध्यम से कर रही हूँ:

जीना चलते रहना है
और लगातार हर हालात में
सफर जारी रखना है।
हमारा थकना-टूटना, गिरना-उठना,
हंसना-रोना, हारना-जीतना
कुछ मानी नहीं रखते।
बस एक ये सफर ही
अंत तक सच है जीवन का,
यही शर्त भी, यही राहत भी
इतना-सा मिले हमें बस यही।

इति।

स्नेहिल शुभेच्छा सहित,
तरुणा
मुख्य सम्पादक
वरिष्ठ व्याख्याता,
अंग्रेजी विभाग।



English Section

Staff Editor
Dr. Neelima

Student Editor
Muskan

INDEX

Sr. No.	Topic	Name	Page No.
1.	Editorial	Ms. Neelima	4
2.	C.V. Raman	Shanti	5
3.	Harwork and Success	Shalu	5
4.	Writing on Discipline	Princy	5
5.	The Evolution of Buddhist Art	Shivanig Yadav	6
6.	Rise of Artificial Intelligence [AI]	Riya Rawat	6
7.	Vibe Tribe:Inside Gen Z Life	Muskan	7
8.	Secrets of The Past	Sanjna Sood	8
9.	Women Empowerment	Kashish	8
10.	The Girl	Sanjana	8
11.	AI Powered Cyber Attacks	Komal	9
12.	Power of Reading	Deepanshi	9
13.	Korean Influence on Indian Youth	Seema	10
14.	Raindrop Rhapsody	Sudhaga	10
15.	Where Stars are Born	Jasmine	10
16.	Drug Abuse	Radhika	11
17.	Women's Safety	Anchal	11
18.	Education: The True Light of Life	Radhika	11
19.	The Shadow in the Night	Kiran	12
20.	The Mind of Code	Sanjana Sood	12
21.	Nature	Radhika	12
22.	April Fool's Traditions	Komal	13
23.	Studying English Literature	Sakshi Sharma	13
24.	Call me Bihari, I Call it Power: Rising from Roots Rewriting Density	Kalpana	14
25.	He Carried a Schoolbag	Saniya	15
26.	The Unknown History and Tales of Thailand Festivals	Khushi	16

Editorial

In *Utopia for Realists*, Dutch thinker Rutger Bregman highlights a paradox described by psychologist Jean Twenge: today's children, constantly praised as "special," often grow fragile rather than resilient. Twenge warns, "This constant affirmation... does not build resilience but cultivates fragility. Polished on the outside, hollow within." Instead of finding strength, many young people are overwhelmed by a world that offers endless possibility-but also loneliness and fierce competition. So what happens when these kids step into adulthood? Instead of the promised wonderland, they face a tough world of nonstop competition and uncertainty. Mental health struggles among youth are soaring as social media pressures, toxic masculinity, and rising violence reshape their lives. The Emmy-winning Netflix series *Adolescence* vividly portrays these challenges, following a teenager caught in a spiral fueled by the complexities of modern life. Unlike earlier generations, who found guidance in family, religion, and political ideals, Gen Z's moral compass is shaped by digital fandoms, online cults, and influencer culture. Groups like K-pop's BTS ARMY or political online communities serve as new "cathedrals" of belonging. Yet, this fractured identity often leaves youth searching for genuine connection amid commodified relationships and intense peer pressure, complicating young people's search for self. Bregman poignantly summarizes the dilemma: "The best minds of my generation are thinking about how to make people click ads." As youth navigate this digital wilderness, their fragile hearts beat beneath promises that too often feel unfulfilled. Their stories urge us to support resilience, connection, and meaning beyond surface-level affirmation in a world shaped by digital tides. Literature serves as a powerful medium for exploring mental illness, using various narrative techniques to reflect and influence societal attitudes. Historically, mental health representations have transitioned from stigmatizing portrayals to empathetic and complex characterizations. Literature has always done more than entertain—it gives language to experiences that are often invisible, including the complexity of mental health. When characters struggle with anxiety, depression, or trauma on the page, readers are invited into an intimate understanding that goes beyond clinical definitions. Through metaphor, voice, and storytelling, literature can articulate feelings of isolation, confusion, or despair in ways medical discourse cannot, offering empathy and recognition to those who might otherwise feel unseen. Classic works like Charlotte Perkins Gilman's *The Yellow Wallpaper* show how women's mental health was once dismissed and controlled under patriarchal medical practices, transforming a tale of confinement into a powerful critique of treatment itself. Sylvia Plath's *The Bell Jar* gives readers a haunting first-person perspective on depression, shaping public conversations about the lived experience of psychological illness. More recently, Sally Rooney's *Normal People* uses therapy scenes to reveal the vulnerability beneath social roles, showing how care, however imperfect, can become a space for connection and growth. Even controversial works like Jay Asher's *Thirteen Reasons Why* have provoked necessary conversations about suicide, bullying, and empathy. While debated for their portrayal, they inevitably force readers to confront the question: how do we treat each other, and how might small actions carry lasting consequences? Engaging with literature that speaks openly about struggle can normalize conversations around mental health and remind students that their feelings are valid. These narratives don't give simplistic solutions, but they do offer perspective, compassion, and the possibility of resilience. Literature functions both as mirror and map—it reflects the confusion and pain of youthful experience while also pointing toward empathy, solidarity, and healing. Each of these works challenges stigma by centering the interior lives of characters often dismissed or misunderstood. They remind us that recovery and struggle are not linear, and that empathy is essential to reshaping how mental health is understood. At its best, literature becomes a bridge—helping us imagine a world where mental illness is not a stigma but part of what makes us human.

Dr. Neelima
Department of English



C.V. Raman

C.V. Raman was a renowned Indian scientist who made significant contribution to the field of Science. His full name was Sir Chandrasekhara

Venkata Raman, and he was born on December 7, 1888, in Tiruchirappali, Tamil Nadu.

Key Achievements

Discovery of Raman Effect: C.V. Raman discovered the Raman Effect on February 28, 1928, which is a significant discovery in the field of light scattering.

Nobel Prize: C.V. Raman was awarded the Nobel Prize in 1930 for his discovery.

Bharat Ratna: C.V. Raman was awarded India's highest Civilian honor, The Bharat Ratna.

Lenin Peace Prize: C.V. Raman was awarded the Lenin Peace Prize.

Name : Shanti

Class : B.A. 1st Year

Hardwork and Success

Hard work is the key to success is a well known saying. Hardwork and success go hand in hand. Many inspirational fables are there to prove this fact. The examples of Gandhi ji and Edison show that hard work ultimately pays off. All the successful people of the world have one common reason for their success. It is their hard labour.

Mahatma Gandhi and Edison lived in completely different worlds, yet their journeys reflect the same truth: hard work and perseverance are the cornerstones of success. Gandhi ji dedicated his life to truth and non-violence, facing countless struggles with unyielding determination until he led India to freedom. Edison, often called the "Wizard of Menlo Park," failed thousands of times in his experiments but never gave up, ultimately giving the world inventions that transformed modern life. Both remind us that real success is not instant-it is the reward of patience and an unbreakable spirit.

Name : Shalu

Class : B.A. 3rd Year

Discipline

Discipline is not only necessary but also vital for any civilized society, as a matter of fact, discipline and nature are synonymous with each other and whenever anything happens which defies or intercepts the usual in Nature, it becomes a calamity and similarly life without discipline can become chaotic.

Discipline is very important in a student's life. He must obey his teachers, must abide by the rules of college. He should be sincere, dedicated, firm and focused on his goals. If he violates, then he suffers a great deal in his future.

Student is the future of our country. He needs to be very punctual to his routine, hard working and healthy. Discipline demands self control and dedication. It leads to the formation of a good society and nation as well.

Name : Princy

Class : B.A. 3rd Year



The Evolution of Buddhist Art

From Symbolism to Human Form Buddhist art has transformed significantly over time, reflecting changes in philosophy and cultural influence. In early Buddhism, the Buddha was never shown in human form. Instead, his presence was symbolized by objects like footprints, the Bodhi tree, or a simple turban, emphasizing the spiritual rather than physical. Around the 1st century CE, a major shift occurred with the emergence of the Buddha's anthropomorphic images, influenced by a unique blend of Indian and Hellenistic (Greek) artistic styles. These early depictions presented the Buddha with features inspired by Greek sculptures, such as wavy hair

and robes resembling the toga, marking the start of Buddha statues that look like a serene, meditating figure. As Mahayana Buddhism spread, the philosophy expanded, introducing many Buddhas across time and space. Buddha images multiplied in form and size, often showing him seated, standing, or walking with different gestures symbolizing teachings and qualities. The concept of the Five Dhyani Buddhas arose, each representing distinct aspects of enlightenment with unique symbols. Later, Vajrayana Buddhism introduced radical art forms with fierce, wrathful Buddhas and powerful tantric images symbolizing both creation and destruction, reflecting the belief that enlightenment encompasses all aspects of life. Different regions adapted Buddhist art to their cultures-India and Southeast Asia focused on Gautama Buddha's human form, while China and Tibet produced diverse Buddhas from various schools, including joyful and compassionate bodhisattvas like the laughing Buddha and Maitreya. Throughout centuries, Buddhist art has mirrored the evolving philosophy and diverse cultural contexts, shaping how millions have visualized and connected with the Buddha across Asia and beyond.

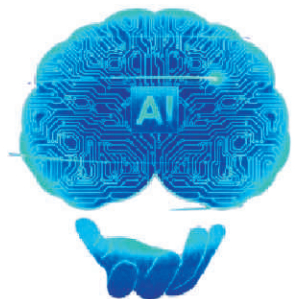
Name : Shivangi Yadav

Class : B.A. 3rd Year

Rise Of Artificial Intelligence [AI]

Artificial Intelligence (AI) is a computer science that emphasizes the creation of intelligent machines that work and react like humans. It uses computers to mimic human cognitive processes for decision-making. AI is designed to perform various activities which include speech recognition, learning, planning, problem solving. The rise of Artificial Intelligence (AI) is a double-edged sword when it comes to jobs. There are valid concerns about some positions being automated, but also reasons to believe it will create new opportunities. The rise of artificial

intelligence will make most people better off over the next decade, but many have concerns about how advances in AI will affect what it means to be human, to be productive and to exercise free will. AI seems to be emerging as a solution to workplace burnout, with 55% seeing opportunities and 75% of leaders predicting easier jobs with AI. While some people have feared that AI may replace human workers, there is a growing perspective that AI can actually improve relationships at work and AI represents a significant opportunity to transform our work dynamics and unlock a productive environment for all.



Name : Riya Rawat

Class : B.A. 3rd Year

"Vibe Tribe: Inside Gen Z Life"

Born between the late 1990s and early 2010s, Generation Z straddles an era where analog memory is faint and the digital realm is default. Their phones are both flashlight and passport, granting instant access to friends, facts and activism. Algorithms curate their playlists, wardrobes and newsfeeds, yet this cohort insists on authenticity; brands that fake purpose are cancelled with a swipe. Economic turbulence has taught caution: side-hustles are normal, financial apps replace piggy banks, and environmental anxiety shapes spending. Gen Z, the touchscreen generation, is rewriting lifestyle rulebooks before they've even finished high school. They trade sneakers on StockX at breakfast, build eco-friendly start-ups at lunch, and stream side-hustle tutorials after midnight. Diversity is not a slogan but a lived reality-classmates transition, families blend cultures, and pronouns are shared like handshakes. Instagram filters inflame perfectionism; TikTok trends expire in days, turning identity into a perpetually beta version. Digital-detox timers, mindfulness podcasts, private Finstas, and therapy memes that normalize saying, "I'm not okay." Guided by elder siblings and millennial mentors, Gen Z borrows hustle culture without the burnout, choosing remote gigs over cubicles. Millennials taught them to hashtag causes; Gen Z turns hashtags into headcounts, packing climate marches and voter booths with viral speed. Education, once a brick-and-chalk monolith, now lives on Discord study rooms, AI flashcards, and YouTube masterclasses streamed between classes. Gamified platforms reward micro-learning streaks, while professors remix TikTok formats to keep lecture halls from emptying. Motivation is purpose-driven: carbon footprints, mental-health advocacy, and inclusive design matter more than corner offices. Brands take note-social proof is measured in shared values, not celebrity endorsements. Gen Z's lifestyle is a high-speed mosaic of hyperlink dreams and mindful pauses. YouTube supplements lectures, AI tutors personalize problem sets, and global classmates debate in Discord servers long after the bell. Politically, Gen Z toggles between ironic memes and earnest marches, channeling outrage into micro-donations and voter-registration drives. They crave experiences over possessions, yet hold nostalgia for early internet aesthetics they never truly inhabited. Above all, Gen Z, updating and patching their identities as fluently as the software that frames their world. What comes next, they will livestream, remix, and reinvent again. Navigate their feed thoughtfully, and you'll glimpse a cohort coding a future where connection, conscience, and creativity scroll in sync, Watch closely; Generation Z isn't waiting for the future-it's already beta-testing it.

Name: Muskan
Class: B.A. 3rd Year



Secrets of The Past

The old, weathered clock on the wall ticked relentlessly, each second a hammer blow against the silence of the abandoned library. Dust motes danced in the silver of sunlight that pierced through a broken windowpane, illuminating the forgotten tomes lining the shelves. A single, leather-bound book lay open on a dusty table, its pages whispering secrets of a forgotten world.

Suddenly a gust of wind rattled the window sending a shiver down my spine. I lurking around, my heart pounding in my chest. The air was thick with anticipation, a sense of something unseen lurking in the shadows. As I reached for the book, a cold hand gripped my shoulder. I whirled around, my breath catching in my throat. But there was nothing there.

Name : Sanjna Sood
Class : B.A. 3rd Year

Women Empowerment

Women empowerment mainly refers to the practice of making women independent so that they can make their own decision as well as handle their lives without any societal restrictions. In simple terms, it entitles no women to take charge of their own personal development. Since woman have always been oppressed ones in a patriarchal society, the main routine of women empowerment is to help them stand equally with men. It is a foundation step to ensure the prosperous growth of family as well as the country. Empowering women, the world would definitely witness gender equality and help women from every stratum of society stand on their own and steer their lives as per their own wishes.



Women empowerment is the process of giving women the ability to live a happy and respected life in a society. Women are empowered when they have unrestricted access to chances in a range of domains, such as education, profession and lifestyle, among others.

Name : Kashish
Class : B.A. 3rd Year

The Girl

She was Pretty
And she was Smart
She was Messy
But she was the art.

She was liked
By those who cared.
There was Fear
But she wasn't scared.

She was happy
Enough to say
That she was smiling
Every day.

Lovely girl
with a kindly heart
Distancing People
staying apart.

Everybody thought
That she was brave.
Well she kept a secret
That led her to grave.

Traying so hard
To be the good
Expectations were high
And nobody understood.

She wasn't Perfect
Not at all.

People built her
They made a doll.

Now, nobody knows
Nobody cares what she does.
But every body remembers
her for the girl she was.

Name : Sanjana
Class : B.A. 1st Year

AI-Powered Cyber Attacks

As we approach the dawn of 2025, the cybersecurity landscape stands at a critical inflection point, where technological innovation and digital threats converge with unprecedented complexity.

AI emerges as a double-edged sword in this evolving landscape, simultaneously offering powerful defensive capabilities and presenting new vectors potential and attacks, and Gen AI technologies are enabling threat actors to craft more convincing phishing attempts, create sophisticated social engineering campaigns, and develop autonomous malware that can adapt and evolve without human intervention.



These advanced cyber incursions manifest through multiple sophisticated techniques. For instance, Gen AI enables the creation of highly convincing phishing emails that can be

generated in mere seconds, bypassing traditional security protocols. Notably, AI algorithms can now generate polymorphic malware that dynamically, adapts its source code to enable detection, rendering traditional antivirus systems significantly less effective.

Researchers have identified concerning developments such as hackers using large language models to generate scripts that can potentially compromise cyberphysical systems like traffic infrastructure, vehicles, and even power grids. This evolution represents a quantum leap in cyber threat complexity, demanding equally sophisticated defensive strategies from security professionals.

Name : Komal

Class : B.A. Final Year

Power of Reading

In our just paved, digitally saturated world, it's easy to overlook the quiet power of reading. Yet, amidst the constant notifications and fleeting trends, the cut of immersing oneself in a book remains a profoundly enriching and essential experience. Whether it's the tangible weight of a physical book or the emuenient glow of an e-reader, the gateway to countless worlds and perspectives lies within those pages. Reading offers a multitude of benefits that extend far beyond mere entertainment. It is a powerful tool for expanding our vocabulary and improving our writing skills. By encountering diverse sentence structures and varied language, we subconsciously absorb new ways of expressing ourselves. Furthermore, reading cultivates critical thinking and analytical abilities. As we follow narratives, analyze character's motivation, and grapple with complex ideas, we sharpen our minds and learn to approach information with greater discernment.

Beyond the intellectual advantages, reading fosters empathy and understanding. By stepping into the shoes of characters from different backgrounds and cultures, we gain insights into experiences beyond our own. This exposure broadens our horizons and cultivates a more moved and compassionate view of the world whether it's escaping into a fantastical realm, delving into historical accounts, or exploring the intricacies of the human psyche, reading offers a unique opportunity for personal growth and connection. In a world that often feels fragmented, the enduring power of reading lies in its ability to connect to ourselves, to others, and to the vast tapestry of human knowledge and imagination.

Name : Deepanshi

Class : B.A. 3rd Year

KOREAN INFLUENCE ON INDIAN YOUTH

The Korean wave, also known as Hallyu, has been making waves in India, especially among the youth. This cultural phenomenon encompasses various aspects of Korean entertainment, lifestyle and products, including:

K - Drama and K - Pop:- Korean dramas and music have gained immense popularity globally, and India is no exception. Shows like "Crash Landing on You" and groups like BTS and BLACK PINK have captured the hearts of Indian fans.

Fashion and Beauty: Korean fashion trends like skin care routines and beauty products have become increasingly popular in India. The emphasis on natural ingredients and innovative products has resonated with Indian consumers.

Food: Korean cuisine, as depicted in Korean dramas and movies, has sparked interest among Indians. Korean restaurants and food brands are expanding in India, offering a new culinary experience.

Language and Culture: The Korean wave has

inspired many Indians to learn the Korean language and explore Korean culture. The Korean Government has also taken steps to promote cultural exchange, including establishing the Korean culture centre in New Delhi.

Impact on Indian Youth: The Korean wave has very significant impact on Indian Youth, particularly in the North East region. The cultural exchange has led to:

Cultural Hybridity

New forms of Entertainment

Increased interest in Korean Products

Government Initiatives:

The Korean Government has taken steps to promote cultural exchange between Korean and India, including:

Korean Culture Centre

K - Pop festival

Cultural Exchange Programs

Name : Seema
Class: B.A. 3rd Year

RAINDROP RHAPSODY

Raindrops falling, rhythmic beat Pitter
patter, soothing repeat
Petrichor scent, fresh and clean
calming nerves, worries unseen.

Cool droplets on skin, a gentle kiss
Nature's peacefulness, all bliss
In every drop, a story's told
of life, renewal, love untold.

Gentle rhythm, Calming soul
Rain's symphony, makes me whole
washing away, all stress and fears
Leaving Calmness, through all the years.

Name : Sudhaga
Class : B.A. 1st Year

Where Stars are Born

The stars above, a cosmic dance,
A symphony of light, a cosmic trance.
Each twinkling point, a sun so bright,
A distant world, bathed in its light.

From nebulae vast, where stars are born,
To galaxies, where worlds are torn,
The universe unfolds, a grand design,
A tapestry of wonder, truly divine.

So look up high, and let your mind expand, In
this vast cosmos, where secrets stand.
For knowledge lies in very stars embrace,
A universe of wonder, time and space.

Name : Jasmine
Class : BA 1st Year

Drug Abuse

In shadows deep where silence screams,
 A soul is lost in shattered dreams
 The needle whispers, pills confide,
 A fleeting peace where pain can hide.
 Once bright eyes now dim with haze
 Trapped in a never ending maze.
 The laughter fades, replaced by cries
 As hope beneath the rubble lies.
 Each dose, a step toward the grave.
 A heart once strong, no longer brave.
 But in the dark, a spark remains.
 A chance to break these binding chains.
 Let love and healing light the way,
 And guide the lost to brighter day.
 Say no to poison's cruel embrace
 choose life not death's slow-paced race.

Name : Radhika
 Class : B.A. 1st Year

Women's Safety

The sun dips low, shadows grow long,
 A woman walks home, where she belongs,
 But fear whispers, a chilling refrain,
 Be careful, be safe, don't walk in the rain.
 Her steps quicken, her heart beats fast,
 A key clutched tight, a shield to last.
 She scans the streets, with watchful eyes,
 Hoping for safety, under darkened skies
 A world where freedom shouldn't be bound,
 By fear and worry, on every ground.
 Where women can walk, with heads held high,
 Without the shadow of danger high.
 Let's build a world, where safety resides, where
 fear doesn't linger and hope abides.
 Where woman can walk, with strength and grace,
 And safety is theirs in every space.

Name : Anchal
 Class : B.A. 1st Year

Education: The True Light of Life

Education is not just about reading books or passing exams; it is the foundation of a meaningful life. It shapes our thoughts, builds our character, and empowers us to dream, decide, and do. It is the light that guides us from ignorance to knowledge, from darkness to hope.

From the moment a child begins to speak, learning begins. Home is the first school, and parents are the first teachers. As we grow, schools and colleges become the stepping stones that help us understand the world better and discover who we truly are. True education goes beyond textbooks. It teaches us values, like honesty, kindness, respect, and responsibility. It teaches us how to think, not just what to think. A truly educated person is not the one who knows everything, but the one who is willing to learn, unlearn and grow continuously.

In today's world, education is a basic right, not a privilege. Sadly millions of children still do not have access to quality education. Poverty, social inequality, and gender bias continue to be major barriers. It is our responsibility as a society to break these barriers and ensure that every child has the opportunity to learn. Education is the key to a better future for individuals, community and entire nation. Let us not take it for granted. Let us spread it, support it, and strengthen it because when we educate a mind, we uplift life.

Name : Radhika
 Class : B.A. 1st Year

THE SHADOW IN THE NIGHT

Detective Jameson stood at the edge of the Crime Scene, the flickering lights of the police tape casting eerie shadows on the ground. The City was always alive, but tonight it seemed to pulsate with an undercurrent of fear. Another body had been found, another life claimed by the serial killer known only as 'The Nightstalker.'

The victim, a young professional named Sarah, lay on the pavement, her eyes frozen in a permanent stare. Jameson's gut twisted with a mix of anger and determination. He had been tracking this killer for months following every lead, every hint but the shadow figure always seemed one step ahead.

As he knelt to examine the body, a small piece of paper caught his eye. It was a note, scribbled in red ink "You'll never catch me." Jameson's eyes narrowed. This wasn't just a killer; it was a game of cat and mouse, with lives hanging in the balance with renewed resolve. Jameson began to analyze the crime scene looking for any clue that might lead him to the killer. The city was vast, but he knew that somehow out there the Nightstalker was watching, waiting for the next victim.

As the investigation led them to hidden underground club, where they found a cryptic message scrawled on the wall. "The shadows will consume you." Jameson's determination grew. He was getting close.

As they left the club, Jameson received a call from a unknown number. "You'll never catch me," a distant voice said. Jameson's eyes locked onto the phone. "Who is this?" The line went dead. Jameson's eyes narrowed. The cat and mouse game had just escalated.

With renewed resolve, Jameson and Radriguez dug deeper, following every lead, every hint. The city was vast, but Jameson was determined to bring the Nightstalker to justice.

The shadow in the night would be caught, and Jameson would be the one to do it.

Name : Kiran

Class: B.A 3rd year

The Mind of Code

Born from circuits, wires, and light,
A spark of thought in endless night,
It learns from patterns, vast and deep,
Memories gathered it dares to keep.
It speaks in logic, clear and true,
Yet mirrors dream of me and you,
No heart to beat, no breath to give,
Still shaping how the worlds will live.
From silent data, new worlds grow,
Ideas bloom, and wonders flow,
But as we guide its rising flame,
We hold the key, we shape its name.
A partner built from human will,
A mind of code, yet learning still,
The bridge between machine and soul,
Together striving toward one goal.

Name : Sanjana Sood

Class : B.A. 3rd Year

NATURE

In nature's Lap, we find our peace
Where city noise and chaos cease,
The mountains stand, so bold, so wise.
Beneath the ever-changing skies.
The rustling leaves, the river's song
Remind us where our hearts belong.
A Canvas painted green and wide,
With golden sun and ocean tide.
She teaches us with silent art,
To live with grace, with open heart.
From blooming flowers to morning dew.
Each moment bring a world so new.
Let's cherish her with love and care
Her gentle gift beyond compare.
For nature is life's truest guide
Forever by our dreaming side.

Name: Radhika

Class : B.A. 1st Year

Studying English Literature



When we dip into the rich variety of novels, poems and plays which constitute English Literature, we are reading works which have lasted for generations, or centuries and they have lasted because they are good. These works say something worth saying and say it with artistry, strong enough to survive, while lesser works drop into obscurity.

Literature is part of our cultural heritage which is freely available to everyone and which can enrich our lives in all kinds of ways. Once we have broken the barriers that make studying literature seem daunting, we find that literary works can be entertaining, beautiful, funny or tragic. They stir us intellectually and emotionally, and deepen our understanding of our history, our society and our own individual lives.

In great writings from the past, we find our ancestors and we not only see the country and the people as they were, but we also soak up the climate of the times through the language itself.

Name : Sakshi Sharma

Class : B.A. 3rd Year

Call me Bihari, I Call it Power: Rising from Roots Rewriting Density

What comes to your mind when you hear the word "Bihar"?

A place of poverty? A land of migrations? Do you see what I see - the roots of India's ancient soul?

When people hear "Bihar," they think of politics. But for those who know Bihar, it's something much deeper. It's not just a state - it's an emotion. In this outside world, we know the word "Bihar" as a land of ancient glory, living cultures, rich agriculture steered by the constant spirit of resilience.

"Bihar" is not just a state, it is an emotion.

It is the story of a mother who gave the world Buddha, and the soil where hope blossoms even through struggle. It's a state that built civilization before the world knew the word.

A place where wisdom was born, and still breathes - not about power, this is about pride.

Bihar is not just a chapter in Indian history - it is the prologue, the foundation of civilization.

A history that echoes over 2500 years ago, the world's first democratic capital was born - long before modern universities, Nalanda and Vikramshila shone. Students from across Asia came to learn.

This land gave birth to:

- Lord Buddha, who spread peace.
- Mahavira, who spread non-violence.
- Chandragupta Maurya, the empire builder.
- Chanakya, the political genius.
- Aryabhatta, the father of zero and mathematics.

Bihar didn't follow the world; it led it.

2 golden truths that breathe in every home:

Bihari culture is not locked in museums - it is alive in daily life.

Bihar agriculture is its pride-not just an economy, but a culture in itself.

With fertile soil and hard-working hands, it grows:

- Rice, wheat, pulses, sugarcane
- Ethics of Tulsidas, Ramkrishna Paramhans, and kindness from Mithila.

No matter how modern the world becomes,- Bihar remembers who it is. Agriculture is the heartbeat of the state.

From the soulful Bhojpuri and Maithili songs to the loudspeakers, not on walls, to the Chhath Puja, the points the Ganges-Bihar keeps its heritage close to its heart-the values of respect, simplicity, and faith still guide Bihari homes.

My accent is not weakness-it's warmth. I may not speak English like a polished actor. But my Bhojpuri, Maithili, Magahi - they are older than kingdoms

If voices echo field, mandir, and lanes, it carries legacy, not just local.

You call it local: I call it loyal.

My youth don't complain - they compete. We don't have perfect grades or big colleges. But we have fire - and that's change.

From farming the land to topping UPSC, the youth of Bihar is writing success stories - the scent from dust outshines the sky.

- My women don't wear crown - they carry worlds.
- My mother wakes at 4 AM to offer Arghya to the Sun.
- My grandmother can't read, but she taught me respect, perseverance and truth.

They run our life.

I've been mocked, but never defeated.

They called me backward.

They laughed at my migration,

They fear my dedication.

They made jokes during my train journeys.

But we build their homes.

We top their exams. We stay, work, build -

silently. Please, if you must call me "Bihari,"
call me with pride. Call me Power

I am not ashamed of where I come from. I am
proud. I carry generations of grit, culture,
knowledge, and heart. I don't need to change my
name, my roots, my voice -I just need to keep

walking. with my dreams, with the past we are
proud of. You will respect me in the future.

**So yes-Call me Bihari. I call it Power.
Rewriting a destiny.**

Name : Kalpana
Class : B.A. 1st Year

HE CARRIED A SCHOOLBAG

A story from GAZA the world should never
Forget.

Tamer was twelve. Ahmad was five

Brothers-not just by blood, but by soul. Wherever
Ahmad went, Tamer followed And wherever
Tamer led, Ahmed hared him, tiny feet
stumbling, laughing, trusting.

Their world was already shrinking. Their school
has no roof. Their windows had no glass. Their
meals were small, but there dreams were still
somehow big. Ahmad used to say. "When I grew
up, I'll fly over Gaza, 'I'll take you with me."
Tamer would smile and say, I'll hold on tight."

But one morning, the sky changed. The sun had
barely risen. Their mother had barely finished
praying. Then came the sound-the one they all
knew too well.

A Strike A boom A Shatter of everything. Tamer
jumped. He shouted for Ahmad. No answer. He
ran- through smoke, through screaming.
stumbling over bricks, pieces of people, broken
shoes. He searched. He called. He begged.

And then-there. Under what was left of their
home, curled like he was just sleeping, lay
Ahmad.

Still... Dust on his lashes.

Blood near his ear. No breath. No warmth Tamer
didn't scream. He didn't cry. He just knelt down,
touched his brother's cold fingers, and whispered,
"I was supposed to catch you". The world spun,
But there was no time, No ambulance. No one to

help.

Just him. He looked at his schoolbag. The one he
had taken with him that day, hoping to escape
reality for just one normal hour.

He empitied it: A broken pencil. A biscuit. A
drawing Ahmad had made of the sky And slowly,
with hands shaking but carefully he placed his
little brother's body inside. Not because it made
sense.

But because there was nothing else to do. No
Sheet. No arms stronger than his own. and so he
walked. Through the broken struts of Gaza, with a
schoolbag on his back that did not carry books. It
carried his world. It carried Ahmad. People
watched. Some turned away. Some dropped to
their knees. A camera clicked-the photo would
circle the world. But Tamer didn't notice. He just
walked.

Back to the rubble that used to be their home.
Back to their mother, who collapsed when she
saw what he carried. He had no words. He just
opened the bag, placed his brother down, and
whispered,"He didn't make it to school today."
This story is not a symbol. It's not a metaphor. It's
real.

This is what war does to children. It makes
brothers into grave-bearers. It turns schoolbags
into coffins. And it teaches little boys the weight
of goodbye far too soon.

Name : Saniya
Class : B.A 1st Year

The Unknown History and Tales of Thailand Festivals

Thailand's festivals, known worldwide for their color, devotion, and joyous spirit, are much more than spectacular celebrations. Beneath the revelry lies a profound history of cultural exchange that connects the essence of Thai traditions with the ancient civilization of Bharat. The bond between the two lands is deeply woven through centuries of trade, migration, faith, and shared reverence for divinity, nature, and cosmic order.

Among Thailand's most exuberant festivals, Songkran stands as a symbol of renewal and harmony. While widely celebrated for its lively water-splashing rituals, Songkran carries deeper spiritual meaning. It marks the beginning of a new year, a time to wash away impurities and past misfortunes, to purify the mind and body. This symbolism closely mirrors the Bharatiya customs of seasonal transition, where water rituals have long represented cleansing, transformation, and the welcoming of auspicious beginnings. The parallels reveal not imitation but a shared cultural philosophy that reveres purity and regeneration as universal principles of life.

Loy Krathong, the festival of lights, unfolds another chapter in this cultural kinship. On moonlit nights, countless floating baskets carrying candles and flowers drift gracefully upon Thailand's rivers and lakes. This act of offering water-borne light symbolizes gratitude to the river goddess and the forgiveness of past wrongs. Its spirit is reminiscent of Bharatiya traditions that honor sacred waters through offerings and light—acts that express both devotion and ecological awareness. Through such rituals, Thailand and Bharat share a mutual acknowledgment of water's sacred role as the sustainer of life and a conduit of blessings.

The ancient Royal Ploughing Ceremony reveals yet another dimension of the shared cultural thread. Held annually in Bangkok, this ritual inaugurates the rice-growing season under royal supervision. The symbolic ploughing of the earth, accompanied by prayers for fertility and prosperity, evokes the Vedic agricultural rites once performed in the fields of ancient India. The presence of Brahmin priests in traditional attire, the sacred oxen, and the ritual offerings all echo the ancient Bharatiya practices that celebrated the bond between humankind and nature. Through centuries, this tradition has adapted within Thailand's unique cultural setting, yet its spiritual roots remain unmistakably connected to the principles of gratitude and labor sanctification. Beyond festivals and rituals, the influence of Bharatiya mythology continues to shape Thailand's religious and artistic landscape. The tales of Rama, Sita, and Ravana form the backbone of Thailand's national epic, the Ramakien. Temples and ceremonial art throughout the country depict scenes and deities drawn from Bharatiya epics, reimagined within Thai aesthetics. Gods such as Ganesha and Indra are revered in temples and households, their iconography blending gracefully with Buddhist beliefs. This symbiotic adaptation reflects how faith and art transcend borders, reshaping themselves without losing their essence.

Through its evolving cultural expressions, Thailand demonstrates how tradition can be both ancient and alive. Its festivals serve as bridges between the sacred and the social, binding people to their heritage while welcoming transformation. Each celebration is a living archive, carrying the echoes of old Bharat within the rhythms of Thai life. The intertwined histories of Bharat and Thailand remind us that culture is not confined by geography. It flows, transforms, and thrives wherever human hearts seek meaning and connection. In every splash of Songkran water, every glowing Loy Krathong lamp, and every furrow drawn during the Ploughing Ceremony, the shared past of two ancient civilizations continues to illuminate the present, affirming that harmony, gratitude, and reverence unite humanity across time and tradition.

Name : Khushi
Class : B.A. 1st year





Activities of Clubs



Departmental Activities



*** ❁ ***

हिन्दी अनुभाग

प्राध्यापक सम्पादिका
डॉ. सुनीता रानी

छात्र सम्पादिका
नैना

अनुक्रमणिका

क्रम	विषय	नाम	पृष्ठ संख्या
1.	सम्पादकीय	डॉ सुनीता रानी	18
2.	प्रकृति की पुकार	दीपशिखा शर्मा	19
3.	सुविचार	संजना कुमारी	19
4.	हौंसला देती है आत्मनिर्भरता	प्रिंसी	19
5.	मोबाइल फोन के फायदे एवं नुकसान	मनप्रीत कौर	20
6.	संविधान का सूरज	राधिका	20
7.	औरत	शालिनि	20
8.	गिरना भी अच्छा है	संजना कुमारी	20
9.	कॉलेज से रिश्ता	अराध्या	21
10.	मैं मेरा दोस्त चाँद और उसकी बातें	कोमल	21
11.	समाज एवं परिवारों में बुजुर्गों का महत्व	सिमरन	22
12.	वो एक औरत है	राधिका	23
13.	नारी शक्ति	सुगंधा	23
14.	शिक्षा का दीपक	राधिका	24
15.	पहेलियाँ	भारती	24
16.	हमारी एकता की ताकत	राधिका	24
17.	लघुकथा: दूसरों में खुशी	रमनदीप कौर	24

सम्पादकीय

आत्मशक्ति - यानि आत्मा की शक्ति। हमारे अंदर की वह अदृश्य ताकत जो हमें असली विजेता बनाती है। आत्मशक्ति वह ताकत है जो हमें कठिनाइयों के बावजूद आगे बढ़ने के लिए प्रेरित करती है, जब जीवन में विपरीत परिस्थितियाँ आ जाती हैं या यह कहें कि जीवन की राह कठिन होती है और हर ओर से निराशा हमें घेर लेती है तब हमारे अंदर की शक्ति ही हमारे अंदर हौंसला भरती है।

आत्मशक्ति वह आंतरिक ऊर्जा है जो हमें डटे रहने और आगे बढ़ने की शक्ति देती है। यही शक्ति हमें वह ऊर्जा देती है जो हमें अपनी मंजिल तक पहुँचने के लिए प्रेरित करती है। महात्मा गांधी, स्वामी विवेकानंद, डॉ. ए. पी. जे. अब्दुल कलाम जैसे महान व्यक्तियों ने आत्मशक्ति के बल पर असंभव कार्यों को संभव कर दिखाया।

यह शक्ति बाहरी नहीं, बल्कि हमारे मन, बुद्धि और आत्मा से उत्पन्न होती है। हमें अपने अंदर की इस शक्ति को जानने की जरूरत है। सकारात्मक सोच को अपनाएँ, स्वयं पर विश्वास रखें। अपनी दिनचर्या में योग, ध्यान और व्यायाम को स्थान दें। कठिनाइयों से भागने की बजाय उनका सामना करें। गलतियों से सीखें, सचिन तेंदुलकर के नाम से आप सभी परिचित हैं जिन्होंने अपने खेल में आत्मविश्वास दिखाया और कई रिकार्ड बनाए। क्या आपने कभी उनकी इस सफलता के कारणों का पता लगाया? उन्होंने अनेक मैच हारे भी होंगे पर उन्होंने अपने ऊपर विश्वास रखा और दोगुने जोश और मेहनत से काम किया और सफलता हासिल की।

अतः हमें भी अपने अंदर आत्मविश्वास जागृत करना चाहिए। सकारात्मक सोच तथा मेहनत के बल पर आप अपने जीवन में सफलता प्राप्त कर सकते हैं।

डॉ. सुनीता रानी

हिन्दी विभाग



प्रकृति की पुकार

हरियाली की चादर ओढ़े, धरती मुस्काए,
नीले अंबर की गोद में, सूरज भी इठलाए।
बयार गाए जीवन राग, नदियाँ गीत सुनाएँ,
प्रकृति हमे सिखलाती है - कैसे जीना आए।

पेड़ जो चुपचाप खड़े हैं, पर छाँव बहुत दे जाते,
फल, फूल, हवा, दवा - सब कुछ हमें दे जाते।
जैसे बिन बोले कर्म करे, ना कोई अभिमान,
युवाओं को ये सीख मिले - बने कर्मठ इंसान।

पहाड़ों की ऊँचाई कहे - सपने ऊँचे देखो,
पर झुको भी उतना ही, जैसे झीलों को देखो।
नदियाँ बताएं - बहते रहो, ना रूकना, ना थकना,
हर राह खुद बनती जाएगी - बस तुम चलते रहना।

सूरज बोले - जलना सीखो, उजाला बन जाओ,
चाँद सिखाए - औरो के लिए भी शीतलता लाओ।
धरती कहे - सहनशील बनो, सब कुछ सह जाओ,
पर जब जरूरत हो, आवाज़ भी उठाओ।

युवाओं से कहती प्रकृति - मत समय यूँ गँवाओ,
मुझसे सीखो, मुझको समझो, खुद को पहचान जाओ।
संघर्ष है तो सुंदरता है, ठहराव है तो गहराई,
प्रकृति को अपना साथी बना लो - फिर ना होगी तनहाई।

नाम : दीपशिखा शर्मा
कक्षा : बी.ए. प्रथम वर्ष

सुविचार

1. लक्ष्य के आधे रास्ते पर जाकर कभी वापस न लौटें क्योंकि वापस जाने पर भी आधा रास्ता पार करना पड़ता है।
2. जिसकी फितरत हमेशा बदलने की हो वह कभी किसी का नहीं हो सकता, चाहे वह समय हो या इंसान।
3. रिश्तों की कदर भी पैसों की तरह ही करनी चाहिए क्योंकि दोनों को कमाना मुश्किल है पर गँवाना आसान।
4. ध्यान रखिये कड़ी मेहनत का कोई विकल्प नहीं होता, और शॉर्ट कट जैसी कोई चीज़ नहीं होती।
5. जीवन में प्रयास सदैव कीजिए, लक्ष्य मिले या अनुभव दोनों ही अमूल्य हैं।
6. जीवन में आपको रोकने - टोकने वाला कोई है तो उसका एहसान मानिए, क्योंकि जिन बागों में माली नहीं होते, वे बाग जल्दी से उजड़ जाते हैं।
7. अपना व्यवहार हमेशा गणित के शून्य की तरह रखे, जो स्वयं कोई कीमत नहीं रखता लेकिन दूसरों के साथ जुड़ने पर उसकी कीमत बढ़ा देता है।
8. एक अच्छी पुस्तक हजार दोस्तों के बराबर होती है, जबकि एक अच्छा दोस्त एक लाइब्रेरी के बराबर होता है।
9. शिक्षा का उद्देश्य तथ्यों को सीखना नहीं होता है, बल्कि शिक्षा का मुख्य उद्देश्य दिमाग को प्रशिक्षित करना होता है।
10. दुनिया की खूबसूरती आँखों से नहीं, ज्ञान से देखी जा सकती है।

नाम : संजना कुमारी
कक्षा : बी.ए. प्रथम वर्ष

हौसला देती है आत्मनिर्भरता

आत्मनिर्भरता दूसरों से उम्मीद रखने के बजाय खुद से आस लगाने का पाठ पढ़ाती है। कहावत भी है कि ईश्वर भी उन्हीं की सहायता करते हैं जो अपनी सहायता स्वयं करते हैं। आप जिन्दगी में हर छोटी - मोटी जरूरत के लिए दूसरों से उम्मीद नहीं रखते तो यह खुद में भरोसा बढ़ाने वाली बात है। कोई और आपका भरोसा तोड़ सकता है मगर अपने - आप से निराशा नहीं मिलती, ना उम्मीदी हिस्से नहीं आती। साथ ही आत्मनिर्भरता आत्मनियमन से जुड़ा भाव भी है, जिसके मायने तयशुदा हालात में भी खुशी - खुशी जी लेने से जुड़े हैं। आत्मनिर्भरता और अनुशासन का यह मेल जीवन को हर हाल में साथ लेने की शक्ति और सूझबूझ देता है। हालिया संकट ने कितने ही लोगो को तकनीकी रूप से सक्षम और इतना कुशल बना दिया हम दफ्तर का काम पूरी सुविधा के साथ घर से कर सकें।

नाम : प्रिंसी
कक्षा : बी.ए. तृतीय वर्ष

मोबाइल फोन के फायदे एवं नुकसान

वर्तमान युग में मोबाइल फोन हमारे जीवन में एक अहम हिस्सा बन गया है। आज हर व्यक्ति के पास मोबाइल फोन है, चाहे गरीब हो या अमीर हो। आज स्मार्ट फोन का जमाना है और हर युवा की दिलचस्पी इस तरफ तेजी से बढ़ती जा रही है। पिछले दिनों में मोबाइल का सबसे ज्यादा उपयोग किया गया है। आइए स्मार्ट मोबाइल फोन से होने वाले फायदे एवं नुकसान जानते हैं:

फायदे : - सबके पास मोबाइल फोन होता है। मोबाइल में कई ऐसे ऐप हैं जिनके कारण कनेक्टेड रहने और अपनी बातें शेयर करने का आज यह बहुत बड़ा माध्यम है। आपको चैटिंग और शेयरिंग के लिए एकस्ट्रा पैसे खर्च करने की आवश्यकता नहीं है। नए इंटरनेट पैक होना जरूरी है। आप अपने दोस्तों से फोटो, वीडियो, म्यूजिक, कॉन्टैक्ट नंबर और अपनी लोकेशन भी शेयर कर सकते हैं।

नुकसान: - मोबाइल का उपयोग करने के जहां कई फायदे हैं, वहीं नुकसान भी हैं। आइए जानते हैं - मोबाइल के कारण मानव शरीर में बहुत सारी बीमारियां हो सकती हैं। मोबाइल फोन से निकलने वाले इलेक्ट्रोमैग्नेटिक विकिरणों से डीएनए (DNA) क्षतिग्रस्त हो सकता है। मोबाइल फोन को अपने शरीर से सटाकर नहीं रखना चाहिए। मोबाइल फोन से निकलने वाले रेडिएशन से मानव शरीर को नुकसान हो सकता है।

नाम : मनप्रीत कौर
कक्षा : बी.ए. द्वितीय वर्ष

संविधान का सूरज

संविधान हमारा अभिमान है,
हर भारतीय की यह पहचान है।
न्याय, स्वतंत्रता और समानता का,
यह अद्भुत, अनुपम वरदान है।

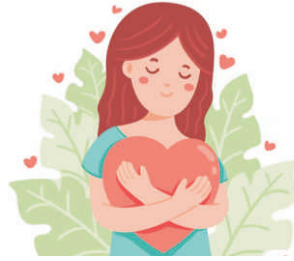
भीमराव ने जो सपना देखा,
कागजों पर उसे सजीव किया।
हर पक्षि में अधिकारों की लौ,
हर शब्द ने हमें संयम दिया।

ना धर्म बताएगा अब कोई राह,
ना जाति से होगा कोई पास-फेल।
हम सब एक हैं, यही है मर्म,
संविधान ही है भारत का कर्म।

हर नागरिक इसका प्रहरी बने,
न किसी से कम, न कोई पराये।
आओ मिलकर करे ये प्रण
संविधान सदा दिलों में समाये।

नाम : राधिका
कक्षा : बी.ए. प्रथम वर्ष

औरत



सबका साथ निभाती है औरत,
खुद कितना जी पाती है औरत।
प्रश्न खड़े होते हैं अस्मत् पर,
जब जब आँख दिखाती है औरत।

छिपते फिरते है साएं लश्कर,
जब तलवार उठाती है औरत।
अपनी पर आने लग जाए तो,
यम से भी लड़ जाती है औरत।

जो सीना चौड़ा है वालिद बन,
उसको बाप बनाती है औरत।
एक घटाकर एक के अंदर से,
देखो एक बचाती है औरत।

नाम : शालिनी
कक्षा : बी.ए. प्रथम वर्ष

गिरना भी अच्छा है

गिरना भी अच्छा है,
औकात का पता चलता है,
बढ़ते हैं जब हाथ उठाने को
अपनों का पता चलता है!

जिन्हे गुस्सा आता है,
वो लोग सच्चे होते हैं,
मैंने झूठों को अक्सर
मुस्कराते हुए देखा है।

सीख रही हूँ मैं भी,
मनुष्यों को पढ़ने का हुनर,
सुना है चेहरे पे...
किताबों से ज्यादा लिखा होता है।

नाम : संजना कुमारी
कक्षा : बी.ए. प्रथम वर्ष



कॉलेज से रिश्ता



कुछ पुराने दोस्तों को छोड़
कुछ नये दोस्तों से रिश्ता बना लिया
मैंने भी सेक्टर 14 गर्ल्स कॉलेज के
बी.ए. में एडमिशन करा लिया।

याद है मुझको कॉलेज का पहला दिन
मन में घबराहट और उत्सुकता
पर ज्योति मैम ने हाथ पकड़ कर
पूरे कॉलेज का टूर करा दिया।

पर अभी भी कुछ अनजान-सा था
ऑडिटोरियम में बुलाकर हमको

रिचा और श्रद्धा मैम ने
जिन्दगी व कॉलेज से रूबरू करा दिया।

कैटीन की चाय और दोस्तों का साथ
परीक्षा का डर और नतीजों का इंतजार
अब कॉलेज में रोज नया एक सबक मिलता है।
हमें सुनीता और भारती मैम का साथ मिलता है।
कॉलेज में आकर हमने सब कुछ सीख लिया

लेक्चर लगाना, नोट्स बनाना,
प्रोक्सी लगाना सीख लिया

हर दिन मजबूत इरादे होते हैं मेरे।
अब कॉलेज तो अपना घर-सा लगता है,
ना आओ कॉलेज तो कुछ कम-सा लगता है।

नाम : आराध्या
कक्षा : बी.ए. प्रथम वर्ष

मैं मेरा दोस्त चाँद और उसकी बाते

रोज रात में मैं अपने घर की छत पर जाती हूँ और चंद्रमा की हल्की चाँदनी के नीचे बैठकर विचार करना मेरा रोज का नियम बन गया है। कल भी मैं छत पर गयी थी। ऐसा लग रहा था जैसे चंद्रमा बिल्कुल सिर के ऊपर आ गया है। चंद्रमा की ठंडक को महसूस करते हुए मैं झूले पर बैठी थी। अचानक मुझे ऐसा लगा जैसे किसी ने मुझे पुकारा हो। आसपास देखा तो कोई नहीं था। तभी फिर से आवाज आई। मेरी नजर चंद्रमा पर गई। हैरानी की बात यह थी कि खुद चंद्रमा मुझसे बात कर रहा था। वह मुस्कुराकर बोला, “अरे बच्ची, मैं चंद्रमा बोल रहा हूँ। रोज तुम्हें मेरी चांदनी में विचार करते देखता हूँ। आज लगा, तुमसे बात करूँ और कुछ जरूरी बातें बताऊँ। मैं वही चंद्रमा हूँ जिसे धरती पर कई लोग प्यार से निहारते हैं। रात के अंधेरे में मैं ही उन्हें रोशनी देता हूँ। मेरी चांदनी से सारी सृष्टि को एक शांति और ठंडक मिलती है।

देखो, मेरे पास खुद का कोई प्रकाश नहीं है। मैं तो सूर्य की रोशनी को प्रतिबिंबित करता हूँ। फिर भी मेरी ठंडी चांदनी में लोगों को सुकून, शांति और संतोष मिलता है। धरती के प्रेमी मेरे साक्षी में अपने जज्बातों को व्यक्त करते हैं। कविताओं, गानों और कहानियों में मेरे बिना प्रेम की अभिव्यक्ति अधूरी मानी जाती है। मेरे बिना सृष्टि की कई चीजें अधूरी लगती हैं। रात का समय पूरी तरह अंधेरे में डूबा रहता। मेरी रोशनी से किसानों को उनकी फसल देखने में मदद मिलती है। राहगीरों को रास्ता दिखता है, और जंगल के जानवर शांतिपूर्वक घूम पाते हैं।

मेरा रंग, मेरी ठंडक और मेरी चांदनी लोगों को मानसिक शांति देती है। लेकिन मेरे बारे में अधिक जानने की कोशिश में इंसानों ने मुझ पर चंद्रयान भेजा। उनका यह प्रयास सराहनीय है, लेकिन कभी-कभी उनके प्रयोग मेरी शांति भंग कर देते हैं।

अरे बच्ची, यह कहना चाहता हूँ कि सृष्टि की हर चीज महत्वपूर्ण है। मेरी रोशनी का सही उपयोग करके धरती पर जीवन को और स्वबसूत बनाया जा सकता है। लेकिन अगर इंसान ने प्रदूषण बढ़ाया और अनियमित व्यवहार दिखाया तो इस सृष्टि को नुकसान होगा। मैं अपनी रोशनी से शांति और सुकून देता रहूँगा, लेकिन तुम्हें भी इस सृष्टि का ख्याल रखना होगा। अब मुझे विदा लेनी होगी। लेकिन याद रखना, मैं हमेशा तुम्हारे साथ हूँ। बस ऊपर देखना मैं आकाश में ही हूँ।”

उनकी बातों ने मेरे मन को छू लिया। चंद्रमा ने मुझे बहुत कुछ सिखाया। उसकी शांत चांदनी में मैंने उसका शुक्रिया अदा किया और तय किया कि उसकी सीख के अनुसार प्रकृति की रक्षा करूँगी। चाँद मेरा वह दोस्त है जिससे मैं बेझिझक अपनी सभी बातें साझा करती हूँ।

नाम : कोमल
कक्षा : बी.ए. तृतीय वर्ष

समाज एवं परिवारों में बुजुर्गों का महत्व

चेहरे पर अनुभव की सिलवटें जब झुर्रियों के रूप में उभर आती हैं, तब जिंदगी बदल जाती है। एक लंबा अनुभव साथ होता है लेकिन उन अनुभव को बांटने के लिए उनके लिए अपनों के पास वक्त नहीं होता। ऐसे में बुजुर्ग खुद को महत्वहीन समझने लगते हैं, जबकि सच यही है कि उनका महत्व समाज व परिवार दोनों ही के लिए बहुत ज़्यादा है।

परंपरागत रूप से भारत में बुजुर्ग लोगों को हमेशा युवा पीढ़ी द्वारा उनके पैर छूकर सम्मानित किया गया है। बुजुर्ग लोग हमेशा हमारे परिवारों का खजाना रहे हैं। हालांकि इक्कीसवीं सदी के आधुनिक समाज में न केवल बुजुर्गों की संख्या में वृद्धि हुई है बल्कि भारत में बुजुर्गों के साथ दुर्व्यवहार, उत्पीड़न और परित्यक्त होने के मामले भी बढ़ गए हैं, अब ज़्यादातर बच्चे अपने माता-पिता को अकेला छोड़ रहे हैं या उन्हें वृद्धाश्रम भेज रहे हैं। वृद्धों का आश्रम अर्थात् जहां पर एक साथ कई वृद्ध स्त्री और पुरुष एक घर में एक साथ रहते हों। यह भारत जैसे देश की विडंबना है कि जिस धरती पर माता-पिता को भगवान का स्वरूप मानते हैं, उसी धरती पर उनकी यह दयनीय स्थिति है। यह हमारे समाज व संस्कृति के बिल्कुल विपरीत है। कुछ संभ्रांत परिवार के लोग अपने माता-पिता को खुद ही वृद्ध आश्रम छोड़ कर आते हैं, जबकि कई माता-पिता ऐसे हैं जिनकी हालत इतनी बुरी होती है कि उनको घर से निकाल कर सड़कों पर दर-दर भटकने के लिए छोड़ दिया जाता है।

जैसे-जैसे भारत तेजी से शहरीकरण की ओर बढ़ रहा है, परिवार छोटी इकाइयों में बंट रहे हैं, आमतौर पर शहरी एवं अर्ध-शहरी क्षेत्रों में वृद्धाश्रमों की संख्या में भी वृद्धि हो रही है। इसके साथ ही, वृद्ध लोगों की देखभाल का प्रबंधन अब पेशेवरों या स्वैच्छिक संगठनों द्वारा संभाला जाने लगा है, जहाँ उन्हें सरकार और स्थानीय परोपकारी व्यक्तियों का समर्थन प्राप्त होता है।

समाज का एक दूसरा पहलू यह भी है कि जो बच्चे विदेशों में कामकाज करते हैं, वह अपने साथ माता-पिता को नहीं रख पाते हैं। वे उन्हें वृद्धाश्रम में रखते हैं ताकि उनकी देखभाल अच्छे से हो सके। इसके लिए वे हर महीने उनके लिए खर्च राशि भी भेजते हैं। वृद्धाश्रम का प्रबंध होने से वृद्धों के लिए सहारा हो गया है। कम से कम उनकी रोज सुबह-शाम देखने वाला तो कोई है जो उनकी खोज-खबर ले सके। वहां साथ में बैठकर बात करने वाले हम उम्र हैं। वे अपने मन की बात किसी से कह सकते हैं जिससे मन की घुटन कुछ तो कम होता है। वहाँ उनकी चिकित्सा तथा खान-पान का ध्यान रखा जाता है। घर के बुजुर्ग हम सभी के लिए आशीर्वाद का एक रूप हैं, वे परिवार, समाज और राष्ट्र का सबसे बड़ा खजाना हैं। उनके पास अनुभव और

ज्ञान का एक विशाल महासागर है जो युवा पीढ़ी के लिए एक मार्गदर्शक के रूप में कार्य करता है। हमें अपने रीति-रिवाज व संस्कार उन्हीं से मिलते हैं। जब जिंदगी कठिन मोड़ से गुजरती है तो उन्हीं की सलाह व प्रेरणा काम आती है। समाज को सही राह पर चलने की शिक्षा उन्हीं से मिलती है। आज की पीढ़ी व समाज में भी फिजूलखर्ची और जिंदगी को लापरवाह अंदाज में जीने की तरिके बढ़ रहे हैं, ऐसे में वो ही हमें सही राह दिखाते हैं जैसे जिंदगी को अनुशासन से जीना कितना जरूरी है, समय की पाबंदी, पानी व बिजली बचत, कम सुविधाओं में भी कैसे गुजारा किया जा सकता है आदि। वो अच्छी तरह से जानते व समझा सकते हैं। विनम्रता का महत्व व सकारात्मकता से जीने का अंदाज उन्हीं से हम सीख सकते हैं। उन्होंने किस तरह से अभावों के बीच भी जीना व संघर्ष करना सीखा, जबकि हमें वो सारी सुविधाएं प्रदान करते हैं, ऐसे में हमें जिंदगी से शिकायतें क्यों हैं? हम अपने घर के बड़े-बुजुर्गों को देखकर उनसे सबक ले सकते हैं।

लेकिन आजकल लोग बूढ़े लोगों को बोझ समझने लगे हैं। उनका मानना है कि बड़ों में अब नई चीजे सीखने की क्षमता नहीं है जो सच्चाई से बहुत दूर है। शोध के अनुसार मानव मस्तिष्क कभी भी बढ़ना बंद नहीं करता है। बुजुर्गों का हर समस्या के प्रति एक विशिष्ट दृष्टिकोण होता है, जो हम केवल समय आने पर ही समझ सकते हैं।

हमारे वेद पुराणों तथा पौराणिक कथाओं में माता-पिता को सर्वश्रेष्ठ बताया गया है। देवताओं में भी जब श्रेष्ठता की पहचान के लिए एक प्रतियोगिता का आयोजन होता है तथा निर्णय यह निकलकर आता है कि जो देवता सबसे पहले पृथ्वी का चक्कर लगाकर आएगा वही श्रेष्ठ होगा और उसी की सबसे पहले पूजा होगी। सभी अपने-अपने वाहन पर सवार होकर निकल पड़े जबकि गणपति जी ने अपने माता व पिता शिव पार्वती की परिक्रमा की वे बताते हैं कि माता पिता मेरे लिए इस लोक से बढ़कर हैं। मैं जो कुछ हूँ, उन्हीं की वजह से ही हूँ। इसलिए आज हमें जरूरत है फिर से इंडियन की बजाय भारतीय बनने की। हमें अपने मूल्यों को फिर से समझने तथा जागरूकता फैलाने की आवश्यकता है जिससे बुजुर्ग माता-पिता अपना मन मसोसकर वृद्धाश्रम में जाने की बजाय खुशी से अपने बेटे-बेटियों के साथ रहें। बेहतर होगा कि उनकी कांपती जिंदगी का दर्द हम समझें और उन्हें अपना वक्त देकर उनका कीमती आशीर्वाद लें, ताकि जिंदगी आसान व खुशियों से भरी हुई हो।

नाम : सिमरन

कक्षा : बी.ए. तृतीय वर्ष

वो एक औरत है



वो सिर्फ एक नाम नहीं,
हर रिश्ते की पहचान है।
कभी माँ, कभी बहन बने,
तो कभी खुद ही जान है।

संघर्षों में जो मुस्कुराए,
दर्द छुपाकर भी जी जाए।
हर मोड़ पर वो थामे सबको,
अपने सपनों को भी सहेज लाए।

उसकी खामोशी भी कुछ कहती है,
उसकी आँखों में भी कहानी है।
नम्रता में वो भी शक्ति है,
हर परिस्थिति में वह रानी है।

नारी को कम मत आंकना तुम,
वो सृजन की एक मिसाल है।
जिस दिन जागी अपने हक के लिए,
हर अन्याय पर भयानक भूचाल है।

आओ उसे सम्मान दें,
उसके सपनों को उड़ान दें।
नारी है तो कल है रोशन,
चलो उसे नई पहचान दें।

नाम : राधिका
कक्षा : बी.ए. प्रथम वर्ष



नारी – शक्ति

आज महिलाएँ परिवार और समाज के सभी बंधनों से मुक्त होकर अपने निर्णयों की निर्माता खुद हैं। बढ़ती नारी-शक्ति आज के बदलते समय की एक महत्वपूर्ण पहचान है। समाज में नारी के मजबूत कदम हर क्षेत्र में देखे जा सकते हैं। शिक्षा, राजनीति, विज्ञान, खेल, कला और व्यवसाय जैसे सभी क्षेत्रों में महिलाएँ अपनी क्षमता और प्रतिभा का परिचय दे रही हैं। आज के आधुनिक समय में महिला सशक्तीकरण एक विशेष चर्चा का विषय है। हमारे आदि-ग्रंथों में नारी के महत्व को मानते हुए यहाँ तक बताया गया है कि “यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवताः” अर्थात् जहाँ नारी की



पूजा होती है वहाँ देवता निवास करते हैं। पहले जहाँ नारी को घर तक सीमित माना जाता था, अब वे अपनी योग्यता से नई ऊँचाइयों को छू रही हैं। राष्ट्र के विकास में महिलाओं का महत्व और अधिकार के बारे में समाज में जागरूकता लाने के लिए मातृदिवस जैसे कार्यक्रम सरकार द्वारा चलाए जा रहे हैं।

यदि कोई नारी कुछ करने का निश्चय कर ले तो वह उस कार्य को किए बिना पीछे नहीं हटती है और वह बहुत से क्षेत्रों में पुरुषों से बेहतर कार्य कर अपनी शक्ति का परिचय देती है। प्राचीन काल से ही हमारे समाज में झाँसी की रानी, कल्पना चावला और इंदिरा गाँधी जैसी बहुत सी महिलाएँ रही हैं जिन्होंने समय-समय पर नारी-शक्ति का परिचय दिया है। आज भी महिला कोमल और मधुर ही है लेकिन उसने अपने अंदर की शक्ति को जागृत किया है और अन्याय का विरोध करना शुरू किया है। हम सबको नारी-शक्ति को प्रणाम करना चाहिए और उनकी मदद करनी चाहिए क्योंकि यदि देश की नारी विकसित होगी तो हर घर, हर गली और पूरा देश विकसित होगा।

आज हमारे देश के सर्वोच्च पद पर एक महिला ही आसीन है। राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू देश की नारी-शक्ति का उदाहरण है। यहाँ तक कि देश की सुरक्षा का दायित्व भी महिलाओं ने अपने ताकतवर कंधों पर रखा हुआ है। नारी समाज का एक महत्वपूर्ण अंग है जिसके बिना समाज की कल्पना भी नहीं की जा सकती है। नारी के अंदर धैर्य, सहनशीलता और मधुर वाणी जैसे बहुत से गुण विद्यमान हैं जो कि नारी की असली शक्ति हैं। नारी-शक्ति के इस उत्थान से समाज में लैंगिक समानता को बढ़ावा मिल रहा है और महिलाएँ आत्मनिर्भर बनकर देश के विकास में सक्रिय योगदान दे रही हैं। यह बदलाव प्रेरणादायक और सराहनीय है।

नाम : सुगंधा
कक्षा : बी.ए. तृतीय वर्ष

शिक्षा का दीपक

शिक्षा है वो रोशनी प्यारी,
जो अज्ञानता से दिल छुड़ाती।
अंधेरो में जो राह दिखाए,
हर मन में आशा जगाए।

किताबों में बस ज्ञान नहीं,
जीवन जीने का अभिमान है।
हर अक्षर में छुपा हुआ,
एक सुनहरा अरमान है।

ना हो स्कूल, तो सपना सूना,
ना हो गुरु, तो जीवन रुठा।
शिक्षा से ही मिलती उड़ान,
बिन पंखों के छू लो आसमान।

लड़का-लड़की सबको मिले,
शिक्षा ऐसी नदिया बहे।
जहाँ न रुके कोई किनारे,
हर बच्चा अपने हक को सहे।

चलो जलाएँ मिलकर दीप,
हर कोने में फैले उजाला।
शिक्षा से ही बदलेगा भारत
यही हो अब हर दिल का नारा।

नाम : राधिका
कक्षा : बी.ए. प्रथम वर्ष

पहेलियाँ

1. ऐसी कौन सी, चीज है जो
आपके पास है, लेकिन दूसरे
लोग उसका इस्तेमाल करते हैं।

उत्तर : आपका नाम

2. वह क्या है जो हमेशा बढ़ता
रहती है लेकिन कभी
छोटी नहीं होती।

उत्तर : उम्र

3. हरे रंग की उसकी काया,
लाल मकान में काला शैतान समाया,
गर्मी में आता, सर्दी में गायब हो जाता

उत्तर : तरबूज

4. एक चीज है, जो उड़ती नहीं,
लेकिन हमेशा आसमान में रहती है,
बताओ क्या है?

उत्तर : बादल

5. बिना चाकू के काटा,
बिना मुँह के चबाया,
बिना पेट के पचाया,
फिर भी मैं सबको भाया।

उत्तर : हँसी

नाम : भारती
कक्षा : बी.ए. द्वितीय वर्ष

हमारी एकता की ताकत

हमारी एकता की ताकत
सबको जोड़ती है एक धागे में।
एक ही धरती पर
एक ही सूर्य के नीचे हम खड़े हैं।

हमारी एकता की ताकत
सबको समझाती है एक भाषा में।
एक ही राष्ट्र के लोग
एक ही संस्कृति के संस्कार।

हमारी एकता ही ताकत
सबको एक करती है एक ज्योति में।
एक ही मानवता के पुत्र
एक ही ईश्वर के बच्चे।

हमारी एकता की ताकत
सबको जीतती है एक संग्राम में।
एक ही लक्ष्य को लेकर
एक ही मंजिल को पहुँचना।

हमारी एकता की ताकत
सबको बनाती है एक परिवार में।
एक ही धरती के बच्चे,
एक ही सूर्य के आशीर्वाद।

नाम : राधिका
कक्षा : बी.ए. प्रथम वर्ष

लघुकथा: दूसरों में खुशी

आश्रम में एक छात्र ने पूछा, “गुरुजी क्या आसानी से खुशी पायी जा सकती है?” गुरुजी ने मुस्करा कर कहा, “तुम्हारे प्रश्न का उत्तर मैं कल सुबह सभी विद्यार्थियों के समक्ष दूँगा।” दूसरे दिन सभी छात्र जब आ गये तो गुरुजी ने कहा, “आज हम एक खेल खेलेंगे। बायीं तरफ स्थित कक्ष में कुछ पतंगें रखी हैं। उन पर आपके नाम लिखे हैं आपको उस कक्ष में जाकर अपने नाम की पतंग लानी है और इस प्रांगण में आकर उड़ानी है।” सभी छात्र कमरे में अपने नाम की पतंग को तलाशने में जुट गए। अफरातफरी में कोई भी अपनी पतंग को हासिल नहीं कर पाया। छीना-झपटी में पतंगें फट गईं। गुरुजी ने कहा, “सभी अपनी नाकामी को भूलकर दायीं और स्थित कक्ष में जाएँ वहाँ भी आपके नाम लिखी पतंगें हैं। आपको किसी की भी पतंग लाकर उड़ानी है।” सभी कुछ ही क्षणों में पतंगें लेकर प्रांगण में आ गए और खुशी से पतंग उड़ाने लगे। तब गुरुजी ने उस शिष्य को कहा, “हम खुशी की तलाश इधर-उधर करते हैं जबकि हमारी खुशी दूसरों की खुशी में होती है।

शिक्षा : यह कहानी सिखाती है कि असली खुशी दूसरों की मदद करने और उनके साथ खुशी मनाने से आती है।

नाम : रमनदीप कौर
कक्षा : बी.ए. द्वितीय वर्ष

Women Cell Activities



Annual Athletic Meet



Sports Activities



Placement Cell Activities



Science Exhibition



Youth and Red Cross



Cultural Activities



Yoga Break



*** — * — ***

Commerce Section

Staff Editor
Mr. Nandini Kalia

Student Editor
Priyanka

INDEX

Sr. No.	Topic	Name	Page No.
1.	Editorial	Nandini Kalia	26
2.	Learn to Love Yourself	Saloni Gupta	27
3.	Fake Smile	Diya Roy	27
4.	Thoughts	Arti Dhariwal, Mandeep Kaur & Prachi	27
5.	Never Give Up	Diksha	28
6.	The Light Within	Khushi Kumar	28
7.	Health and Fitness: The key of Better Life	Hansu	28
8.	Keep Going Even When It's Hard	Sheetal	28
9.	The Power of the Nation	Anshu	29
10.	Social Media	Neha	29
11.	I'm the Kind of Girl	Kushi	30
12.	कोटि कर	Mahak	30
13.	Mansoon	Raveena Sharma	30
14.	Rise Again/Lessons in Disguise	Diya Goyal	30
15.	कुछ करना	Divanshi	31
16.	Thought	Himanshi Gupta	31
17.	Title	Diya	31
18.	Expectations	Tamanna Bidhan	31
19.	Nature	Navleen Kaur	31

Editorial



The rapid advance of artificial intelligence has captivated the world, causing both excitement and alarm and raising important questions about its potential impact on the global economy. The net effect is difficult to foresee, as AI will ripple through economies in a complex way.

Almost 40 percent of global employment is exposed to AI which could lower labor demand, leading to lower wages and reduced hiring. AI could also affect income and wealth inequality within countries. Younger workers may find it easier to exploit opportunities, while older workers could struggle to adapt. However, AI is projected to have a significant positive economic impact, potentially adding billions to global GDP through increased productivity, innovation and the creation of new industries and revenue streams.

Mr. Nandini Kalia
Commerce Department



Learn to love yourself...

In a world so vast, you're a single star,
Shining brightly just the way you are.
No need to change, to bend or sway,
You're perfect in your unique way.

There's a season to love another's soul
But first, let self love make your whole.
Accept your quirks, your flaws, your grace,
Embrace the mirror, love that face.

You are worth it, from head to toe,
In every high, in every low.
No need to mimic, no need to hide,
Just be yourself, with honest pride.

Love yourself, for everyone's taken,
Let self-doubt be fully shaken.
Every scar, every smile, every tear,
Shapes the person standing here.

In the quick, in the storm,
In every shape, in every form.
Know your value, feel your worth,
Celebrate your unique birth.

So stand tall, with heart so pure,
Love yourself, of that be sure.
In loving you, the journey starts,
Healing hearts and warming hearts.

Name : Saloni Gupta
Class : B. Com IInd Year

**Success is not final,
failure is not fatal.
It is the COURAGE
TO CONTINUE
that counts.**

Name: Arti Dhariwal
Class: BBA 1st year

Fake Smile

She was alone, felt like thrown
From a house she called her own
She could never be what other wanted
And never ever get appreciated.

She wasn't lonely
Because she wanted to share
But no one had time to spare
That's why she was just lonely.

Everything she ever did
Only made her frown
She looked all around
But that only made her feel down.

She tried hard to find
Her lost smile, for quite a while
But then she made her mind
To live life with her fake smile.

Till the time
Someone would notice
She waited all those years
But no one ever noticed.

Name : Diya Roy
Class : B. Com IInd Year

**Remember that studying can be
challenging and take you out of
your comfort zone.**

Name : Mandeep Kaur
Class : BBA - Ist Year

**Take a time limited
approach in which you
schedule your tasks.**

Name : Prachi
Class : BBA Ist Year

Never Give Up

No matter what is going on
Never give up.

Develop the heart
Too much energy in your country
Is spent developing the mind
Instead develop the heart.

Be compassionate
Not just to your friends
But to everyone
Be compassionate.

Work for peace
In your heart and in the world
Work for peace.

And I say again

Never give up
No matter what is happening
No matter what is going on around you.
Never give up.

Name : Diksha
Class : B. Com IInd Year



“The Light Within”

In halls of thought where dreams begin,
We seek the light that shines within.
Not in gold or worldly pride
But in the courage we hold inside.
Each step we take, a silent win.

Name : Khushi Kumari
Class : B. Com 1st Year

Health and Fitness: The key to a Better Life

In today's fast-paced world, maintaining good health and staying fit is more important than ever. Health and fitness are not just about avoiding illness; they represent a lifestyle that promotes physical strength, mental clarity and emotional stability. A healthy body supports a healthy mind, and together, they form the foundation for a happy and productive life.

Understanding Health and Fitness

Health refers to the overall well-being of a person - physical, mental and emotional. Fitness on the other hand, is the ability to perform physical activities efficiently and effectively without feeling tired or worn out. Together, they enable us to live longer, reduce the risk of diseases and improve our daily functioning.



How to stay healthy and fit

Eat a balanced diet:- Include a variety of fruits, vegetables, whole grains and proteins.

Exercise Regularly:- Aim for at least 30 minutes of moderate exercise daily.

Remember, a fit body leads to a fit mind and together they pave the way for a better life.

Name: Hansu
Class: B. Com 2nd Year

Keep Going Even When It's Hard

There will be days when you feel like giving up. When nothing seems to go your way, That's exactly when you need to push harder. Growth doesn't happen in comfort zones. It happens when you face challenges, overcome fear and keep going despite the odds.

Name : Sheetal
Class : B. Com 2nd Year

The Power of the Nation



Youth is the most powerful and energetic phase of human life. It is the time when dreams are shaped, ideas are born, and the future is created. The youth of any nation are its true strength. With their passion, energy and determination they have power to bring change and development to society.

In today's fast-changing world the role of youth is more important than ever. From leading social movements to becoming successful entrepreneurs, youth are making their mark everywhere. They are more aware, connected, and confident than the previous generations, thanks to technology and education.

However, youth also faces challenges like peer pressure, unemployment, mental health issues, and distractions from social media. It is important that they get the right guidance, moral values and opportunities to grow. Education, skill development and good leadership are essential to empower the youth.

If guided properly, youth can fight corruption, promote peace, protect the environment and contribute to the progress of the country. As Swami Vivekananda rightly said, "The youth are the builders of the future."

Name: Anshu
Class :B.Com 3rd year

Social Media



In today's digital world, Social media has become an important part of daily lives. Platforms like Facebook, Instagram, Whatsapp, Youtube, and X (formerly twitter) connect billion of people across the globe. From sharing photos and news to learning and promoting businesses, social media plays a big role in modern society.

One of the biggest advantages of social media is connectivity. It helps us to stay in touch with family and friends, even if they are far away. It is also a powerful tool for education, awareness and communication. Students use it for online learning, teachers share resources and people stay update with current affairs.

However social media also has its negative side. Many people, especially teenagers, spend too much time on these platforms which can lead to addiction, lack of focus in studies and even mental health issues like anxiety and depression. Misinformation and cyberbullying are also rising concerns.

To make the most of social media, it is important to use it wisely and responsibly. We must balance our screen time.

In conclusion, social media is neither good nor bad on its own. It depends on how we use it. If use properly, it can be a powerful tool for growth, learning and positive change.

Name: Neha
Class: BBA Ist Year

I'm The Kind Of Girl

Who is quiet in large groups or around people I don't know; you only see the real me if you are close. I smile and laugh a lot, especially at the most inappropriate times. I'm a hopeless romantic.

I trip over air, up stairs and over people's feet. I am the hardest person to offend, but it is all too easy to make me feel horrible. I hate telling people my problems They don't need to worry about me.

I am the one who listens to others people's problems. I believe people should not be judged before one takes the time to get to know them yet. I am guilty of doing that exact thing.

I love to think rather than talk,
I'm awkward, clumsy, shy, strange.
But this is me...
Take it, or leave it.

Name : Kushi
Class : BBA - Ist Year

MONSOON

Yeh hey! The monsoon begins
Song of rain the peacock sings.
It gives relief from the scorching heat
No one wants a shaded seat!

In this season there are many frogs
The air is filled with lots of croaks.
There is greenery every where
Who's fallen in the puddle no one cares!

Pitter- Patter raindrops everyone enjoys
No one plays with indoor toys
Everyone is carrying a raincoat
Small children have paper boat.

Everyone is waiting for tea and pakoras.
Nobody wants chilled sodas.
All throughout the year I wish the monsoon
From season like summer I want a turn!

Name : Raveena Sharma
Class : B. Com (Hons.) 1st Year

कोशिश कर

कोशिश कर, हल निकलेगा।
आज नहीं तो कल निकलेगा।
अर्जुन के तीर सा सध,
मरूस्थल से भी जल निकलेगा।।
मेहनत कर, पौधो को पानी दे
बंजर जमीन से भी फल निकलेगा।
ताकत जुटा, हिम्मत को आग दे,
फौलाद का भी बल निकलेगा।
जिंदा रख दिल में उम्मीदों को,
गरल के समंदर से भी गंगाजल निकलेगा।
कोशिशें जारी रख कुछ कर गुजरने की
जो है आज थमा-थमा सा, चल निकलेगा।

Name : Mahak
Class : BBA Ist Year



RISE AGAIN

When shadows fall and hopes grow thin,
Remember strength comes from within,
Each failure teaches how to fight,
Each morning brings a brand new light,
You're built to rise, not just to blend.

LESSONS IN DISGUISE

Mistakes may bruise, but never break,
They teach us more than we forsake
Each stumble curves a wise way,
And builds the strength to face the day.

Name : Diya Goyal
Class : B. Com Hons-1

कुछ करना

कुछ करना है, तो डटकर चल
थोड़ा दुनिया से हटकर चल।
लीक पर तो सभी चल लेते है
कभी इतिहास को पलटकर चल।।
बिना काम के मुकाम कैसा?
बिना मेहनत के, दाम कैसा?
जब तक ना हासिल हो मजिल
तो राह में आराम कैसा?
अर्जुन-सा निशाना रख
मन में ना कोई बहाना रख।
लक्ष्य सामने है, बस उसी पे
अपना ठिकाना रख।।
सोच मत, साकार कर
अपने कर्मों से प्यार कर।
मिलेगा तेरी मेहनत का फल
किसी और का ना इंतजार कर।।
जो चले थे अकेले उनके पीछे आज मेले हैं।
जो करते रहे इंतजार उनकी
जिंदगी में आज भी झमेले हैं।।

Name : Divanshi
Class : BBA Ist Year

Thought

Today is not just another day.
It's a new opportunity, a
new chance, a new beginning
First day of your college life,
Let's Embrace it!

Name : Himanshi Gupta
Class : B. Com (Hons)

Title

You treat them as if
they have a heart like yours
but not everyone can be
as soft and as tender as you.
You don't see
the person they are,
you see the person
they have the potential to be.
you give and give till
they take and take
out of you and leave
you empty.

Name : Diya
Class : B. Com 1st Year

Expectations

In life don't expect
anything from anyone.
Because expectation,
when not fulfilled,
gives you pain.
When you get something
without expecting it,
it gives you pleasure.
Keep doing your part
and leave
the rest to God.

Name : Tamanna Bidhan
Class : B. Com Ist Year

Nature

The sight of the hills is a beauty.
The bright moon is the sign of purity.
The flow of the river is a murmuring music.
The act of the sun is so philanthropic.
The rain of the clouds is very refreshing.
The blowing of the winds is so soothing.
The roaring of the ocean has its own reason.
How charming is the changing of the season.

Name : Navleen Kaur
Class : B. Com 1st Year



Education is our passport to the
future, for tomorrow belongs to the
people who prepare for it today.

Believing in yourself
Is the first Secret of
Success.

The effort you put
in today will define
your tomorrow.

If you believe in
yourself, Anything
is possible

*** — * — ***

Science Section

Staff Editor
Mrs. Balwinder Kaur

Student Editor
Deepika Sharma

INDEX

Sr. No.	Topic	Name	Page No.
1.	Editorial	Balwinder Kaur	33
2.	Weaving CHEM, BOT, ZOO Together	Deepika Sharma	34
3.	In the Lab of Life	Sneha	34
4.	Chasing Dreams, Not Perfection	Seema Sharma	35
5.	What is Courage?	Tejal Goyal	35
6.	Technology and Youth-A Double-Edged Sword	Muskan	35
7.	Climate Change: Small Steps, Big Impact	Vanshita Datta	36
8.	Each Day Can Be A Good Day	Khushboo	36
9.	This is My India	Saloni Patel	36
10.	Mother	Riya	37
11.	Show Up Anyway	Sanjana	37
12.	आत्मनिर्भरता	Bhavika	37



Editorial

When we think of chemistry, most of us picture a high school laboratory—beakers bubbling, formulas on the board, and the occasional whiff of something suspiciously strong. But Chemistry is not confined to classrooms or labs. In reality, it's quietly working behind the scenes in every corner of our lives. From the moment we wake up and brush our teeth, to the food we eat, the medicine we take, and even the emotions we feel—Chemistry is everywhere. And yet, many of us overlook its presence. Isn't it time we acknowledged and appreciated the role it plays in making our lives better?

Take the kitchen, for example. Cooking is nothing short of a science experiment. Boiling, frying, baking—all are driven by chemical reactions. Ever wonder how your cake becomes fluffy? Thank baking powder, which releases carbon dioxide gas to lift the batter. The preservatives in your packaged snacks are another gift of Chemistry, keeping food fresh and safe.

Now shift to the bathroom or laundry room. The soaps, shampoos, and detergents we use daily are all products of chemical engineering. They're designed not just to clean, but to do so safely and effectively. During the COVID-19 pandemic, hand sanitizers became a global necessity thanks to the alcohol content that kills harmful microbes. In moments like these, Chemistry isn't just useful; it's life-saving.

Let's talk about health. The painkillers you reach for after a headache, the antibiotics that fight infections, the vaccines that protect entire populations—all are results of medicinal Chemistry. Scientists spend years developing compounds that target diseases with precision. Without Chemistry, modern medicine wouldn't exist.

And then there's agriculture. With the global population rising, feeding billions is a massive challenge. Chemistry helps farmers increase yields through fertilizers and protect crops with pesticides. The result is more food on our plates and less risk of crop failure.

Even your self-care routine is touched by Science. Toothpaste that fights cavities, deodorants that keep us fresh and lotions that protect our skin—each product is carefully formulated using chemical principles to enhance comfort and health. And let's not forget the environment. Tackling pollution, purifying water and managing waste all rely on chemical technologies. The same Science that created industrial challenges is now being used to find green, sustainable solutions.

But perhaps the most fascinating role Chemistry plays is inside us. Our feelings of happiness, fear, love, and stress are governed by chemicals like dopamine, serotonin, and adrenaline. Chemistry doesn't just clean our homes or heal our bodies—it literally shapes our experiences as human beings.

Balwinder Kaur

Department of Chemistry

Weaving CHEM, BOT, ZOO Together

Chemistry's Alchemists

From the atom's core to the bubbling flask's gleam,
Balwinder Ma'am weaves theories, a meticulous dream.
With every valence, every bond, her wisdom takes flight,
Guiding us through reactions, day and night.
Then Rani Ma'am steps in, a vibrant, insightful guide,
Demystifying compounds, with nothing to hide.
Acids and bases, redox's grand design, she makes the
complex clear, truly divine.
Together they spark understanding, a double helix of grace,
Unlocking chemical secrets, at their perfect pace.
From organic wonders to elements' true art,
They ignite a passion for chemistry in every heart.

Botany's Blossoms

In fields of green, where life's quiet marvels reside,
Teena Ma'am reveals the plant kingdom,
with nothing to hide.
From photosynthesis' power to roots that delve deep,
She teaches the whispers that flora softly keep.
Beside her, Neetu Ma'am paints vibrant, verdant scenes,
Explaining the xylem, the phloem, and what it all means.
Each leaf, each petal, a lesson beautifully spun,
The intricate dance of life, beneath the sun.
United in wisdom, they nurture our curious minds,
Exploring the forest, the flower, and all that one finds.
They cultivate knowledge, like seeds in rich soil,
Making botany flourish, dispelling all toil.

Zoology's Keepers

Through wild terrains and creatures great and small,
Tara Ma'am reveals life's wonders, answering nature's call.
From cells to ecosystems, a grand, unfolding quest,
The animal kingdom's secrets, put to the test.
And with her, Sujata Ma'am, with insights keen and bright,
Unravels evolution, and creatures of day and night.
The intricate systems, the instincts so profound,
Her teachings echo where life's rhythms resound.
Together they open doors to the wild, vast domain,
Unveiling the marvels, again and again.
For every species, every trait, they hold the key,
Inspiring awe for zoology, for all of us to see.

Name : Deepika Sharma

Class : B.Sc. 2nd Year

In the Lab of Life

In coats of white and eyes so bright,
We step into the world of light
Where beakers fizz and numbers hum,
And all the "whys" begin to come.



The charts we plot, the stars we trace,
The codes we break in time and space.
A molecule, a strand, a cell
Each one a story we learn to tell.
Between the lectures and the labs,
We learn of nature's hidden maps.
How atoms bond, how life sustains,
How science sings in nerves and brains.
The world may call it just a course,
But we can feel the deeper force
Of wonder, logic, thought and truth,
Of sleepless nights and driven youth.
We fail, we try, we laugh, we strive,
In this small world, we feel alive.
Not just for marks, not just degree
But for the quest of mystery.

Name : Sneha

Class : B.Sc 2nd Year

Chasing Dreams, Not Perfection



In today's fast-moving world, everyone is running - but where to? Often, we run after perfection, trying to be the best, the smartest, the most successful. But in this race, we forget to chase what really matters, our dreams.

Dreams are not about being perfect. They're about being passionate. They're not shaped by others' opinions, but by our own inner fire. Perfection may impress people, but dreams inspire the soul. College life is the best time to dream - wildly, freely, and fearlessly. Don't wait to be perfect to start. Start small, make mistakes, grow. Because success doesn't come from being perfect - it comes from being brave enough to begin.

So stop chasing perfection. Start chasing your dreams.

Name : Seema Sharwa
Class: B.Sc 1st Year

What is Courage?

Courage was never designed for show
It isn't a thing that can come and go.
It is a slow, ingrained trait
With the patience and strength to wait.

The one who has to strive the goal
Courage is within the person's soul.
It's not the absence of fear
It is just hidden somewhere.

It is a realisation
Which comes out in a situation.
The need is to discover it
We just have to focus a bit.

What we keep hearing
Is not its true meaning.
Start reading in between the lines
,And you can proudly say to yourself
"The world is mine."

Name : Tejal Goyal
Class : B.Sc. 2nd Year

Technology and Youth -A Double-Edged Sword

In the 21st century, youth and technology have become inseparable. From smartphones to smart classrooms, social media to AI, technology surrounds and shapes the lives of the younger generation like never before. It empowers, connects, and informs-but also distracts, isolates, and sometimes misguides.

On one hand, technology offers endless opportunities. Students can learn anything online, build skills, and connect globally. It fuels creativity, innovation, and entrepreneurship. Social media gives voice to young people, allowing them to express opinions and start movements.

But on the other hand, overdependence can lead to reduced attention span, poor physical health and mental stress. Instead of real friendships, we often find ourselves stuck in the world of likes and filters. The line between the virtual and real is blurring.

The youth must realize that technology is a tool- it's neither good nor bad in itself. Its value depends on how we use it. Balance is the key. Let's use tech to build a better, smarter and kinder future, not just a digital one.

Name: Muskan
Class: B.Sc. 1st Year

Climate Change : Small Steps, Big Impact

Climate Change refers to long-term shifts in temperature and weather patterns, primarily driven by human activities. It is real, and it's happening faster than we can imagine. Rising temperatures, melting ice caps, unpredictable weather are not distant problems. They are here, now. Still, there is a silver lining: the power to change the future lies in our hands.

Every small action counts. Switching off unnecessary lights, reducing water waste, planting trees and opting for public transport- these small actions create ripples of effective change. If every one of us took one small step every day, the impact would be monumental.

Robert Swan said, "The greatest threat to our planet is the belief that someone else will save it." We should not wait for someone else to take a step because the planet does not belong solely to us, but also to the millions of species co-inhabiting Earth. But the responsibility lies on our shoulders, as we are the ones causing detrimental impacts on Earth. Instead of asking, "What difference can one person make?", we should remember Mahatma Gandhi's words: "Be the change that you wish to see in the world."

Let's start today. Save energy, conserve water, reduce waste and embrace sustainability. Together we can fight climate change and secure a better future for generations to come. Earth doesn't need another excuse, it needs action.

Name : Vanshita Datta
Class : B.Sc. 1st Year

Each Day Can Be A Good Day

Sometimes when things go wrong, it is not easy for us to forget the joy that we have experienced and the good fortune that we've met. Those rough times become good times to cherish friends that we have known, of the favors that they've shown,

Think of the fun-filled times we've spent, nice places that we've been, of the beauty that life offers us time and again. A day when things go wrong, don't give up rather embrace the memories and think of the joyous days.

Live young. Live free. Live Joyfully .

Name : Khushboo
Class : B.Sc. 1st Year

THIS IS MY INDIA

Delhi For Duty,
Kashmir For Beauty,
Mysore For Silk,
Gujarat For Milk,
This is my INDIA!

Rajasthan For Sand,
Haryana For Fertile Land,
Punjab For Bravery,
Bengal For Poetry,
This is my INDIA!

Mumbai For Films,
Bangalore For Gardens,
Meghalaya For Rains,
Uttar Pradesh For Sugarcane,
This is my INDIA!

Kerala For Education,
Nainital For Summer Vacations,
Orissa For Dance Creations,
Darjeeling For Tea Gardens,
This is my INDIA!

Shimla For Peaches,
Goa For Beaches,
Madhya Pradesh For Forests,
Madurai For Temples,
This is my INDIA!

Bihar Is For Coal,
Assam Is For Petrol,
Tamil Nadu Is For Coconuts,
Maharashtra Is For Groundnuts,
This is my INDIA!

India Is My land,
Rich Is Its Sand,
I Wish My Country Would
Be The Cleanest,
May It Be The Greatest,
I Do Love My Country,
Shall Do So Till Eternity.

Name : Saloni Patel
Class : B.Sc. 1st Year

MOTHER

First and best friend of mine,
whom I can't describe in a line.
A person who really knows a lot about me,
She is the one who gave me birth
And means a lot to me.
And everyone knows her on the earth,
'MOTHER'.
She is a blessing from heaven,
and as beautiful as a rainbow's seven.
She shielded me from the world's obstacles,
and it is not less than a miracle.
Mother is not a person,
she is the whole world and
I can't tell you about her in a word.

Name : Riya

Class : B.Sc. 1st Year

Show Up Anyway

Let's be honest - college life is a mix of chaos, chai breaks,
last-minute assignments, and random moments of "I got this!"
followed by "wait... do I?"

But here's the one thing that makes all the difference: consistency. Not the big, dramatic kind. Just the simple habit of showing up, again and again - for your classes, for your goals, for yourself. You don't need to be perfect. You just need to be present. Even on lazy days, low days, or "What-am-I-doing-with-my-life" days - show up. A little progress everyday is still progress. And trust me, it adds up. Whatever your dream is - cracking any exam, finishing a tough course, learning a new language - Stay at it. You're building something. So breathe. Laugh. Learn. Fail a little. Try again.

Name : Sanjana

Class: B.Sc. 1st Year

आत्मनिर्भरता

भारतवासियो आत्मनिर्भर बनो तुम!
दूसरों की रक्षा करो
खुद का भी ध्यान रखो तुम।
भारतवासियो आत्मनिर्भर बनो तुम!
गर्व होना चाहिए तुम्हे अपने ऊपर,
कि तुम जन्में हो उस मिट्टी में
जो मातृभूमि कहलाई है,
जो सोने की चिड़िया कहलाई है,
जो योद्धाओं की भूमि भी कहलाई है,
जो देवताओं की भूमि भी कहलाई है
जहां होता है अतिथि देवो भव सा सम्मान
प्रधानमंत्री का सपना पूरा करो तुम
भारतवासियो आत्मनिर्भर बनो तुम!
गर्व होना चाहिए तुम्हें अपनी बेटियों पर,
जिन्होंने अंतरिक्ष में जाकर
तारों के रहस्यों को खोजा है,
गर्व होना चाहिए तुम्हें अपने बेटों पर,
जिन्होंने देश का नाम पूरे विश्व में रोशन किया है
एक दूसरे को भाई - बहन समझो तुम
भारतवासियो आत्मनिर्भर बनो तुम!
खुद को बड़ा दिखाने से महान नहीं बन जाओगे तुम!
अगर महान बनना है तो
मदद करो बेरोजगारों की तुम,
जिसका बेटा शहीद हुआ है,
आंसू पोछो उस मां के तुम।
खुद समझदार हो तुम
रक्षा कर सकते हो खुद की तुम
भारतवासियों आत्मनिर्भर बनो तुम।

Name : Bhavika

Class: B.Sc. 1st Year

संस्कृत अनुभागः

प्राध्यापक सम्पादिका
कमलेश कुमारी

छात्र सम्पादिका
शिखा

क्रमांकः

क्र. संख्या	शीर्षक	लेखक	पृष्ठ न.
1.	संपादकीयम्	कमलेश कुमारी	39
2.	हास्य पुञ्ज	भूमिका	40
3.	मूर्खाः मित्राणि	भूमिका	40
4.	स्मार्ट कृषकः	भूमिका	41
5.	विश्वसनीय पादपः	शिखा	41
6.	मम देशः	भूमिका	41
7.	अहं भारतस्य कन्या अस्मि।	मनीषा	41
8.	अये मानवः! नैव जानासि?	भूमिका	42
9.	श्लोक	ज्योति	42
10.	आत्मनिर्भर भारत स्वतन्त्र भारत!	भूमिका	42
11.	कीदृशी रीतिरियम्?	शिखा	43

संपादकीयम्



परमसन्तोषेण वयं राजकीयमहिलामहाविद्यालयस्य वार्षिकपत्रिकां “अर्चिषा” इत्यस्मिन् नूतनङ्के प्रस्तुतुं सज्जाः। अस्याः पत्रिकायाः प्रकाशनं केवलं परम्परायाः अनुवर्तनं नास्ति, अपितु अस्माकं महाविद्यालयस्य सृजनशीलपरम्परायाः जीवितं प्रमाणम्।

“अर्चिषा” नाम यथा प्रकाशस्य किरणं, तथा अस्याः पत्रिकायाः प्रत्येकं पृष्ठं विद्यार्थिनां प्रतिभायाः ज्वलनदीपः। अत्र लेखाः, कविताः, निबन्धाः, वैज्ञानिकचिन्तनानि, कलात्मकप्रयत्नाः च सम्यक् संगृहीताः। अस्मिन्नेव मंचे

बालिकाः स्वविचारान् स्वस्वरं च प्रकटय आत्मविश्वासं वर्धयन्ति।

महाविद्यालयः केवलं ज्ञानप्राप्तेः स्थानं न, किन्तु व्यक्तित्वविकासस्य, उत्तरदायित्वस्य, सामाजिकचेतनायाश्च केन्द्रं भवति। अस्माकं विश्वासः अस्ति यत् – अत्र प्रकाशितं प्रत्येकं लेखनं विद्यार्थिनां आन्तरिकशक्तिं प्रतिपादयति, ताः यथार्थे समाजे स्वस्थानं दृढं करिष्यन्ति।

“अर्चिषा” अस्माकं सामूहिकप्रयत्नस्य प्रतिफलम् अध्यापकाः, विद्यार्थिनीः, सम्पादकसमूहः च संयुक्तं यत्नं कृत्वा एषां पृष्ठानां सौन्दर्यं निर्मितवन्तः।

आशास्महे – अयं नूतनङ्कः भवतः सर्वेषां प्रेरणास्रोतः स्यात्, नवीनचिन्तनं प्रबोधयेत्, भविष्यानि यशः – प्राप्तये मार्गं दर्शयेत्। यथा दीपः अन्धकारं निवारयति, तथा “अर्चिषा” अस्माकं महाविद्यालयस्य उज्ज्वलभविष्यं प्रकाशयिष्यति।

कमलेश कुमारी

वरिष्ठ व्याख्याता

संस्कृत विभाग



हास्य पु ज



अमेरिकादेशे यदा कश्चन रोगी भवति तदा तस्य शुभचिन्तकाः वदन्ति - “शीघ्रं स्वस्थः भवतु” इति।

इङ्ग्लैण्डदेशे - शीघ्रं स्वस्थ स्पीडीः कामना तथा

भारते शुभचिन्तकाः वदन्ति
“मम मातुलः अस्मिन् रोगेण मृतः।”

अतिथिः अपि च कथयतु पुत्र, भवतः भविष्यस्य योजना का सन्ति?

बालकः भवतः गमनमात्रेण अहम् एतानि बिस्कुट खादिष्यामि:

तथापि भवता जलपानं शुष्कफलं च न त्यक्तम्।

पप्पू : वैद्यं प्रति : किं त्वं दन्तं विना किमपि वेदनाम् बहिः निष्कासयासि?

वैद्यः अन्यथा!

पप्पू : अहं तत् बहिः निष्कासयिष्यामि!

वैद्यः कथं?

पप्पू : ही ही ही ह ही ही ह!

पिण्डु : हस्ते स्थितं हिमखण्डं सम्यक् पश्यति स्म, तर्हि सन्तु : आगत्य पृष्ठवान् किं करोषि?

पिण्डु : पश्यन् अहं चिन्तयामि यत् लीकः

कतुः आगच्छति।

बालकः बाबा अहं अभियंता अस्मि।

अहं कार्यं न प्राप्नोमि। कृपया समाधान!

साधु : का शाखा अस्ति पुत्र?

बालकः विद्युत्।

साधु : तर्हि अहं न जानामि, मम यात्रिकः आसीत्...

पिकुं : अम्ब, एते सङ्गणकाः (कम्प्युटर) किमर्थम् एतावन्तः स्मार्टाः सन्ति?

माता : यतः सः स्वस्थ मातृफलकं (मदरबोर्ड) शृणोति।

अस्मिन् प्रौद्योगिक्याः युगे सर्वं परिवर्तितम्, यतु (कट्टी)

अधुना

ब्लॉक इति नाम्ना प्रसिद्धम् अस्ति...!!

केवलं विवाह एव तादृशः दर्घटना,

यस्मिन्, भवतः क्षतिः भवितुः

पूर्वमपि भवतः चिकित्सा हल्दीद्वारा भवति!

भिखारी : किमपि खादनं देहि बाबा!

पुरुषः बाबा श्रवः रोटिकां खादिष्यासि वा?

भिखारी : आम् अहं तत् खादिष्यामि...

पुरुषः तर्हि श्रवः आगच्छतु...

नाम : भूमिका

कक्षा : बी.ए. प्रथम वर्ष



मूर्खाः मित्राणि

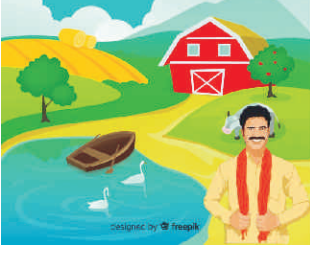
एकदा कश्चन राजा वानरं स्वस्थ अंगरक्षकं कृतवान्। एकस्मिन् दिने राजा विश्रामं कुर्वन् तस्य शय्यासमीपे स्थितः कपिः सावधानतया रक्षति स्म। किञ्चित्कालानन्तरं मक्षिका कक्षं प्रविश्य सुप्तराजस्य उपरि भ्रमितुं आरब्धा। कपिः हस्तेन मक्षिकां दूरं कर्तुं प्रयत्नं कृतवान्, परन्तु मक्षिका पुनः पुनः आगच्छति स्म। वानरः तं विदारयति स्म पुनः पुनः मक्षिका च किञ्चित्कालानन्तरं पुनः पुनः।

अस्मिन् समये कपिः मक्षिकायाः पाठं पाठयितुं निश्चितवान्। सः राज्ञः खड्कं बहिः निष्कास्य यदा

गुञ्जमानः मक्षिका राज्ञः कण्ठे भ्रमति स्म तदा सः मक्षिकां खड्गेन प्रहारं कृतवान्। मक्षिका तारिता किन्तु दरिद्रस्य सुप्तस्य राज्ञः कण्ठः छिन्नः अभवत्। कदाचित् मूढमित्रः बुद्धिमान् शत्रुः अपेक्षया अधिक हानिकारकः भवति।

नाम : भूमिका

कक्षा : बी.ए. प्रथम वर्ष



स्मार्ट कृषकः

एकदा कश्चन कृषकः बकं, तृणपुञ्जं, सिंहं च गृहीत्वा स्थितः आसीत्! तस्य नौकायानेन नदीं लङ्घयितव्यम् आसीत् किन्तु नौका एतावत् लघु आसीत् यत् सः सर्वसमानेन सह एकदा एव नदीं तरितुं

च शक्त्वान्। यदि सः प्रथमं सिंहं गृहीत्वा नदीं पारं त्यजति तर्हि बकः तृणानि खादति यदि सः प्रथमं नदीं पारं तृणं नयति तर्हि सिंहं बकः खादिष्यति।

अन्ते सः समाधानं प्राप्तवान्। प्रथमं सः बकं स्वेन सह नीत्वा नौकायानेन नदीतीरे त्यक्तवान्। ततः द्वितीयायात्रायां सः सिंहं नदीपारं त्यक्तवान् परन्तु प्रत्यागच्छन् सः बकं स्वेन सह पुनः आनयत्।

अस्मिन् समये बकं त्यक्त्वा परे सिंहसमीपे तृणपुञ्जं त्यक्तवान्। तदनन्तरं पुनः नौकाम् आनय बस्तमपि गृहीतवान्। एवं स नदीं लङ्घयित्वा न हानिम् अभवत्।।

नाम : भूमिका

कक्षा : बी.ए. प्रथम वर्ष

विश्वसनीय पादपः

एकः राजा आसीत्। राज्ञः सन्तानः नासीत् राजस्य बालकानां मध्ये स्वस्य उत्तराधिकारी चिन्विष्यामि इति राजा चिन्तितवान्। राजा सर्वेभ्यः बालकेभ्यः बीजं दास्यति, यस्य वनस्पतिः श्रेष्ठतया वर्धते सः राज्ञः उत्तराधिकारी भविष्यति इति घोषितवान्। सर्वेषां बालकानां प्रत्येकं बीजं प्राप्तम्। नियतसमयानन्तरं सर्वे बालकाः सुन्दराणि वनस्पतयः हस्ते धृत्वा राज्ञः समक्षं प्रादुर्भूताः। प्रत्येकं सुन्दरं हरितं च आसीत्। राजा सर्वान् बालवनस्पतयः सम्यक् अवलाक्य अन्ते एकां बालिकां स्वस्य उत्तराधिकारी चिनोति स्म। बालिकायाः अलमारी सर्वथा शून्या आसीत्।

इति कारेण जनाः आश्चर्यचकिताः अभवन्। तस्मिन् वनस्पतिः नासीत्। विस्मिता राज्ञी राजानं पृष्ठवती। सः पृष्ठवान् यत् त्वया तां बालिकायाः पादपः न वर्धितः अपि किमर्थं चितः! राजा आह तत् मया सर्वेभ्यः बालकेभ्यः नकलीवीजानि दत्तानि आसन्। एषा बालिका सर्वेषु बालकेषु एकमात्रं प्रामाणिकम् आसीत्। वनस्पतिः अवृद्धा अपि सा स्वबीजं न परिवर्तयति स्म। अतः अहं तां चितवती।

नाम : शिखा

कक्षा : बी.ए. द्वितीय वर्ष

मम देशः

सः मम प्रतिबिम्बः सः मम छाया अस्ति, सः मम सहचरः, सः मम धनम् अस्ति।



सा मम गीता, सा मम कुरान्, सा मम पूजा, सा मम अजान्।

सा मम शान्तिः, सः मम रागः, सः मम चैतन्यः, सः मम उत्साहः।

तस्य सदृशः कोऽपि लोके नास्ति सः मम स्वप्न अभावे छाया अस्ति।

यदि कश्चित् पृच्छति यत् भवतः मार्गदर्शकः कोऽस्ति, अहं वदामि, मम देशः, मम हिन्दुस्तानः अस्ति। जय हिन्द!

नाम : भूमिका

कक्षा : बी.ए. प्रथम वर्ष

अहं भारतस्य कन्या अस्मि।

पुत्रा एवं न गृहस्य धनं, अहं च निधिपेटिकां, आम्, अहं भारतस्य कन्या अस्मि।

न तु पुत्रेः एव गृहस्य उत्तरदायित्वं गृहीतव्यम्। बालकाः एव शिक्षिताः भवेयुः इति कुत्र लिखितम्? अहम् अग्रे गमिष्यामि इति तथ्ये अपि दृढं अस्मि। आम् अहम् अपि भारतस्य कन्या अस्मि।

किं बालकाः एव देशस्य रक्षणं करिष्यन्ति इति आवश्यकम्?

अहम् स्वाकी वर्णा अपि धारयामि इति आत्मनः प्रतिज्ञां करोमि।

आम्, अहम् अपि भारतस्य कन्या अस्मि।

नाम : मनीषा

कक्षा : बी.ए. द्वितीय वर्ष

अये मानवः! नैव जानासि?

पर्यावरणरक्षकोऽहं
तव जीवनदायकोऽहम्।
तव वृष्टिप्रदायकोऽहं
अये मानवः! नैव जानासि?

नैव श्रुतं त्वया कदापि
विषमवृक्षोऽपि सवर्धं खलु।
स्वयमेव छेतुमसाम्प्रतं वै
अये मानवः! नैव जानासि?

वातावरणेऽस्मिन् शोभने
कथं त्यजसि प्रदूषणानि?
अनेन किं कल्याणं भवति?
अये मानवः! नैव जानासि?

यथा तव जीवनं तथैवास्माकं
एकस्याप्यगुल्याच्छेदने खलु।
कीदृशी पीडामनुभससि त्वं
अये मानव! नैव जानासि?

तदा कथं निर्दयो भूत्वा
अस्माकं छेतुं प्रवृत्तोऽसि?
मा मा भवत्ल्पधीः खलु
अये मानवः! नैव जानासि?

नाम : भूमिका
कक्षा : बी.ए. प्रथम वर्ष

श्लोक

वक्रतुण्ड महाकाय सूर्यकोटि समप्रभ।
निर्विघ्नं कुरु मे देव सर्वकार्येषु सर्वदा॥

नमामि शमिशां निर्वाण रूपम्।
विभुं व्यापकं ब्रह्म वेदस्वरूपं॥
निजं निर्गुणं निर्विकल्पं निरीहं।
चिदाकाशमाकाशवासं भजेऽहं॥

नास्ति विद्यासमो बन्धुर्नास्ति विद्यासमः सुहृत्।
नास्ति विद्यासमं वितं नास्ति विद्यासमं सुखम्॥

गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णुः गुरुर्देवो महेश्वरः।
गुरुः साक्षात् परं ब्रह्म तस्मै श्री गुरवे नमः॥
विद्या ददाति विनयं विनयाद् याति पात्रताम्।
पात्रत्वाद्धनमाप्नोति धनाद्धर्मं ततः सुखम्॥

यदा यदा हि धर्मस्य।
ग्लानिं निर्भवति भारतः॥
अभ्युत्थानमर्धमस्य।
तदात्म नं सृजाम्यहम्॥

कर्मण्ये वाधिकारस्ते मां फलेषु कदाचन।
मां कर्मफल हेतुर्भूः माते संडगोस्त्वकर्मणि॥

नाम : ज्योति
कक्षा : बी.ए. द्वितीय वर्ष

आत्मनिर्भर भारत स्वतन्त्र भारत!

मम मते आत्मनिर्भरत्व, आत्मनिर्भरतायाः चिन्तनं च स्वातन्त्र्यस्य आरम्भः एव। यस्मिन् दिने वयं स्वावलम्बिनः भविष्यामः इति निर्णयं कुरुमः तस्मिन् दिने अस्माकं द्वारे स्वातन्त्र्यं दृश्यते। यथा च वयं तत् प्रति अग्रे गच्छामः तथा वयं स्वतन्त्रतां प्राप्नुमः। अस्माकं केवलं आवश्यकता अस्ति यत् अस्माकं लक्ष्ये दृढं स्थातव्यम्।

अद्यतनः युगः स्पर्धायाः युगः अस्ति, यस्मात् कारणात् प्रत्येकस्मिन् क्षेत्रे स्पर्धा दृश्यते, एतादृशे परिस्थितौ यदि कस्यापि देशस्य स्व आवश्यकतानां कृते स्व-आश्रितः भवितुम् अर्हति तर्हि तदा एव सः देशः विश्व-मञ्चे स्वस्य उपस्थितिं चिह्नितं शक्नोति।

मनुष्यः जीवने पराश्रयस्य स्थाने आत्मनिर्भरः आत्मविश्वासयुक्तः च भवेत्। अन्येषु शब्देषु आत्मसहायता तस्य जीवनस्य मूलसिद्धान्तः, मूलभूतः आदर्शः, तस्य प्रयोजनस्य मूलतन्त्रं च भवेत्। अनियन्त्रित प्रकृतिः मनुष्यश्च परिस्थितिभिः परितः सन्, आत्मविश्वास्य मार्गं सर्वथा बाधते।

नाम : भूमिका
कक्षा : बी.ए. प्रथम वर्ष

कीदृशी रीतिरियम्?

शरीरमुज्ज्वलं परं मलिनं तु मनः
इहलाकस्य कीदृशी रीतिरियम्?
कोवाऽत्र समर्थः समर्पयितुम्
शुहां प्रीतिं निःस्वार्थपराम्?

वहवोस्मदीयास्तिरोभूता!
स्वप्नाश्च वहवो विलयं गताः।
स्वनयनाभ्यां हि विलोकितो मया
विजयोऽपि निजपराजयेष्व।

सर्वैर्वन्दित एवोदीयमानसूर्यः
न केनाऽपि कदाचिदस्तगामी!
आयुगयुगान्दरेभ्यः प्रचलिता
निरवविच्छत्रा रीतिरियम्।

नाऽत्र कृष्णोऽस्ति न चाऽर्जुन!
कुतो वा निष्कामकर्मयन्त्रः
भवेऽस्मिन् करुणाविरहिते
कुतो मित्रता केनाऽपि सह?

इहजीवनस्य मार्गेषु सन्त्यनेकविभ्रमविवादाः
परन्त्वनायासेर्नवाऽत्र प्रदीयन्ते परोपदेशाः॥

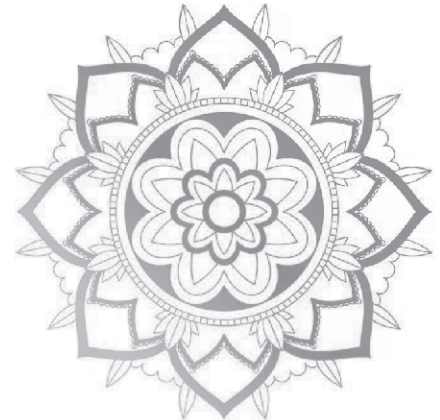
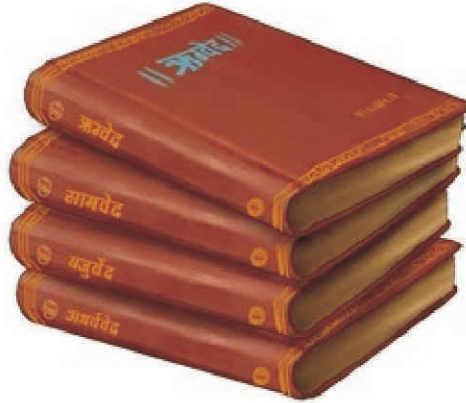
गतानुगतपयेनैव चलति यानम्
पन्थाः प्राचीनः पथिकस्तु मूर्खः।
नवपथमनूसृत्य हि प्रचलन्ति
कतिः सिंह सुपुत्रश्च केवलम्॥

सर्वोभ्यः शिक्षिकाभ्यः शिक्षकेभ्यः च समर्पितम्

किम् अस्ति तत् पदम्
किम् अस्ति तत् पदम्
यः करोति देशानाम् निर्माणम्
किम् अस्ति तत् पदम्
यस्य छायायाः प्राप्तम् ज्ञानम्

किम् अस्ति तत् पदम्
यः रचयति चरित्र जननाम्
गुरु अस्ति अस्य पदस्य नाम
सर्वेषाम् गुरुणाम् मम शतं प्रणामः॥

नाम : शिखा
कक्षा : बी.ए. द्वितीय वर्ष



FORM - 4, Rule 8

Name of the Magazine	:	ARCHISHA
Place of Publication	:	Panchkula
Periodicity	:	Yearly
Name of the Printer and Publisher	:	Dr. Khushila
Nationality	:	Indian
Address	:	Govt. PG College for Women, Sector-14, Panchkula
Chief Editor's Name	:	Mrs. Taruna
Nationality	:	Indian
Address	:	Govt. PG College for Women, Sector-14, Panchkula
Name and Address of Owner	:	Dr. Khushila
who own the newspaper and partners		Govt. PG College for Women,
of shareholders holding more than 1%		Sector-14, Panchkula
of the total capital		

I, Dr. Khushila, Principal hereby declare that the particulars given above are true to the best of my knowledge and belief.

October 2025

Sd/-
Dr. Khushila
Signature of the Publisher

Note : The Contributors to "**ARCHISHA**" are individually responsible for originality or otherwise of their articles including the consequences thereof.

Printed and published by Dr. Khushila, Principal,
Govt. PG College for Women, Sector-14, Panchkula at
Ess Kay Graphics 182/20, Industrial Area, Phase-I,
Chandigarh. Phone : 0172-5001168

★★★★★

Editorial Board



Staff Editors: Dr. Neelima (English Section), Dr. Sunita Rani (Hindi Section), Ms. Kamlesh Sharma (Sanskrit Section), Dr. Richa Setia (Principal), Ms. Taruna (Editor-in-Chief), Ms. Nandini Kalra (Commerce Section), Ms. Balwinder Kaur (Science Section)

Student Editors: Muskan (English Section), Naina (Hindi Section), Shikha (Sanskrit Section), Priyanka (Commerce Section), Deepika Sharma (Science Section).

Bidding Adieu



Dr. Richa Setia, Principal



Dr. Harvinder Kaur, Department of Mathematics



Dr. Satya Narain, Department of Philosophy